की गुरू गरंथ साहिब अनुसार तीरथ इशनान करने जाँ व्ख व्ख धारमिक असथानाँ ते जाणा प्रवान है?

Whether taking bath at various religious places or visiting them is acceptable according to Guru Granth Sahib?

Top Brief Conclusion

जिआदा तर लोक इही समझदे हन कि कुझ रवाइताँ पूरीआँ करन नाल जाँ करम काँड करन नाल, अकाल पुरखु नूं खुश कीता जा सकदा है। कई अैसे लोक वी हन, जो कि जोग साधनाँ विच ल्गे रहिंदे हन, कई चरचा करन विच, कई तीरथ इशनान जाँ दान करना ठीक समझदे हन। कईआँ ने इक अ्खर नूं वार वार दुहराई जाण नूं ही नामु जपणा कहिणाँ शुरू कर दिता है। सोचिआ जावे कि इक अ्खर दा घोटा लाण नाल, किस तरहाँ कोई विशा जाँ पूरी किताब नूं समझिआ जा सकदा है। जे कर पूरी किताब बारे जानणा चाहुंदे हाँ ताँ सानूं पूरी किताब नूं ही पड़हनाँ, समझणाँ ते वीचारना पवेगा। इसे तरहाँ जे कर असीं अकाल पुरखु नाल साँझ पैदा करना चाहुंदे हाँ ताँ सानूं वी गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दी सहाइता नाल अकाल पुरखु बारे पूरी तरहाँ जाणकारी हासल करनी पवेगी। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी विच जुड़िआँ ही सदा काइम रहिण वाली इ्ज़त मिल सकदी है। अकाल पुरखु दा नामु जपण तों बिना कोई मनुख पंज विकाराँ तों ज्लासी नहीं पा सकदा है। अकाल पुरखु ने अैसा नियम बणाइिआ है, कि गुरू दी शरन विच आउंण तों बिना कोई मनुख अकाल पुरखु दा नामु प्रापत नहीं कर सकदा है।

जेकर हरेक मनुख निरी जीभ नाल ही राम राम (अकाल पुरखु दा नाँ) बोलदा रहे, ताँ निरा जीभ नाल राम राम बोलण नाल सफलता नहीं मिल सकदी। जिनहाँ मनुखाँ दे हिरदे विच ठ्गी वसदी है, ते बाहरले भेख नाल उह आपणे आप नूं संत अखवाँदे हन, अजेहे मनुखाँ दे अंदरों माइिआ दी त्रिशना कदे वी नहीं मुकदी। अनेकाँ तीरथाँ ते इशनान करन नाल वी हउमे दी मैल कदे नहीं उतरदी। इस लई खाली मूंह नाल बोलण नाल, नामु जपणा नहीं हो सकदा। अकाल पुरखु दे नामु दा फल ताँ ही मिलदा है, जेकर मनुख दे मन विच गुरू दी किरपा नाल अकाल पुरखु दा नामु व्स जाइे। जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु लई प्रेम बण जाँदा है, उह मनुख अकाल पुरखु नूं कदे वी भुलदा नहीं, ते सदा आपणे मन अते चि्त विच अकाल पुरखु नूं याद करदा रहिंदा है।

गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिअै रामु न होइ ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥१॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥ (४६१)

जेकर ल्ख वारी वी इशनान आदिक नाल सरीर दी सुच र्खी जावे, ताँ वी इस तरहाँ सुच र्खण नाल मन दी सुच नहीं हो सकदी। जेकर मूंह बंद करके, सरीर दी समाधी लाइी र्खीइे, ताँ वी इस तरहाँ चुप करके रहिण नाल मन दी भटकणा जाँ मन दी शाँती नहीं हो सकदी। जेकर सारे भवणाँ दे पदारथाँ दे ढेर वी साँभ के र्ख लइीइे, ताँ वी त्रिशना दे अधीन रिहाँ, मन दी त्रिशना दूर नहीं हो सकदी। जेकर मनुख दे विच हज़ाराँ ते ल्खाँ चतुराइीआँ वी होण, ताँ वी उनहाँ विचों इिक वी चतुराइी साथ नहीं देंदी। ताँ फिर सवाल पैदा हुंदा है कि, अकाल पुरखु दा प्रकाश होण लइी असीं किस तरहाँ योग बण सकदे हाँ ते साडे अंदरों कूड़ दा परदा किवें टुट सकदा है? गुरू साहिब उतर दे के समझाँदे हन कि, रज़ा दे मालक अकाल पुरखु दे हुकमु विच चलणा ही इिक अजेही विधी है अते अकाल पुरखु दे हुकमु दी इिह विधी धुर तों ही जद तों जगत बणिआ है, लिखी चली आ रही है। इिस लई अकाल पुरखु नालों जीव दी व्थ मिटाण दा इिको ही तरीका है कि जीव उुस दे हुकमु ते रज़ा विच च्ले। जेकर पिता दे कहे अनुसार पुतर कंम करदा रहे ताँ दोहाँ दा पिआर बणिआ रहिंदा है, नहीं ताँ आपस विच व्थ पैंदा हो जाँदी है।

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइि रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उुतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इिक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईअै किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाइी चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ (१)

स्ि्ख धरम दा मुढला सिधाँत वी "*हुकमि रजाइी चलणा नानक लिखिआ नालि*", ही है, जिस दा जिकर गुरू नानक साहिब ने जपुजी साहिब ते गुरू गरंथ साहिब दे आरंभ विच ही कर दिता है। जेकर कुदरत दे नियमाँ (शेसटइम) अनुसार रहाँगे ताँ सुखी रहाँगे, परंतू जेकर कुदरत नाल खिलवाड़ कराँगे ताँ नतीजे भुगतण लइी तिआर रहिंणाँ चाहीदा है।

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani3510GurMag200604.pdf
http://www.sikhmarg.com/2006/0430-bani-hukam.html

जिहड़े मनुख मन अंदरों ताँ झूठे हन, परंतू बाहरो झूठी इ्ज़त बणाई रखदे हन, ते जगत विच विखावा करदे रहिंदे हन, उह भावें अठाहठ तीरथाँ उुॅते जा के इशनान कर लैंण, ताँ वी उनहाँ दे मन विचली विकाराँ दी मैल कदे नहीं उुतरदी।

अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ (४७३)

हुण सवाल पैदा हुंदा है कि जेकर गुरबाणी अनुसार अठाहठ तीरथाँ उुॅते जा के इशनान कर लैंण नाल, मन विचली विकाराँ दी मैल कदे नहीं उुतरदी ताँ फिर सिखाँ दा पंज तखताँ जाँ बहुत सारे गुरदुआरिआँ दी यातरा करन नाल जाँ इशनान करन नाल मन दी मैल किस तरहाँ उुतर सकदी है?

गुरू नानक साहिब ने किसे वी तरीके दी खाहित प्रवान नहीं कीती है ते ना ही किसे तीरथ असथान ते जा के इशनान करना प्रवान कीता है, बलकि गुरसिख वासते तीरथ दी परिभाशा ही बदल दि्ती है। सपूशट तौर ते कहि दि्ता कि तीरथु, अकाल पुरखु दा नामु ही है, ते गुरू दे शबद दी वीचार दुआरा अकाल पुरखु दे गिआन नूं आपणे हिरदे विच टिकाणा ही असली तीरथु इशनान है।

गुरू साहिब समझाँदे हन, कि मैं वी तीरथ उुते इशनान करन जाँदा हाँ, परंतू मेरे लई अकाल पुरखु दा नामु ही तीरथ है। गुरू दे शबद नूं आपणे विचार मंडल विच टिकाणा ही मेरे लई तीरथ है, किउुंकि शबद नाल मेरे अंदर जिहड़ा गिआन पैदा हुंदा है, उुस दी बरकत सदका मन दी मैल उुतर सकदी है ते अकाल पुरखु नाल डूंघी साँझ बण सकदी है।

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ (६८७)

अ्जकल असीं आपणे मतलब अनुसार गुरबाणी नूं तोड़ मरोड़ करके वरतणा शुरू कर दिता है। बहुत सारे गुरदुआरा साहिबाँ विच वख वख तीरथाँ उुते जा के इशनान करन दे जाँ यातरा करन दे कई बोरड मिलणगे, "**तीरथि नावण जाउ**"। पर नामु दे इशनान करन दा किते कोई बोरड नहीं मिलेगा, "**तीरथु नामु है**"। खाली वाहिगुरू वाहिगुरू दा रटन करवाउुंण वाले ताँ बहुत मिलणगे, परंतू, "**तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है**" दी वीचार करन वाला कोई विरला ही मिलेगा।

गुरबाणी अनुसार तीरथु नामु है, सबद दी बीचारु दुआरा आपणे हिरदे अंतरि हासल कीता गिआनु ही असली तीरथु है। इस लई गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा पैदा होइआ अंतर गिआनु ही नामु है।

कोई मनुख चुप साधी बैठा है, कोई भाँडिआँ दे थाँ आपणे हथ ही वरतदा है, कोई जंगल विच नंगा तुरिआ फिरदा है। कोई मनुख सारे तीरथाँ दा रटन कर रिहा है, कोई सारी धरती दा भ्रमण कर रिहा है, पर इस तरहाँ मन दी डाँवाँ डोल हालत मुकदी नहीं। कोई मनुख आपणी मनोकामना अनुसार तीरथाँ उुॅते जा वसदा है, मुकती दा चाहवान आपणे सिर उुते शिव जी वाला आरा रखाँदा है, ते आपणे आप नूं चिरा लैंदा है। पर जे कोई मनुख इहो जिहे लखाँ जतन करे, ताँ वी इस तरहाँ मन दे विकाराँ दी मैल नहीं लहिंदी। कोई मनुख सोना, चाँदी, इसत्री, वधीआ घोड़े, वधीआ हाथी अते इहो जिहे कई किसमाँ दे दान करन वाला है। कोई मनुख अंन दान करदा है, कपड़े दान करदा है, जमीन दान करदा है। इस तरहाँ वी अकाल पुरखु दे दर ते पहुंच नहीं सकीदा। कोई मनुख वेद आदिक धारमिक पुसतक नूं पड़हदा है अते विचारदा है, कोई मनुख निवलीकरम करदा है, कोई मनुख कुंडलनी नाड़ी दे रसते प्राण चाड़हदा है, परंतू इनहाँ साधनाँ नाल पंजाँ विकाराँ दा साथ नहीं छुट सकदा है, सगों मनुख होर हंकार विच जकड़िआ जाँदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन कि मैं अनेकाँ ही लोक नूं अजेहे मिथे होए धारमिक करम करदे वेखिआ है, परंतू इनहाँ तरीकिआँ नाल अकाल पुरखु दे चरनाँ विच जुड़िआ नहीं जा सकदा। मैं ताँ इनहाँ करम काँडाँ दा आसरा छड के मालक अकाल पुरखु दे दर ते आ डिगा हाँ ते अरज़ोई करदा रहिंदा हाँ, कि हे अकाल पुरखु! मैनूं बिबेक बुधी वाली अकल दे ताँ जो मैं चंगे बुरे दी परख कर सका।

पाठु पड़िए अरु बेदु बीचारिए निवलि भुअंगम साधे ॥ पंच जना सिउ संगु न छुटकिए अधिक अहंबुधि बाधे ॥१॥ पिआरे इनि बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ हारि परिए सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ ६४१-६४२)

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2060GurMag200609.pdf

http://www.sikhmarg.com/2006/0903-vidia-vichari.html

हरेक जीव दुनीआ वाला सुख मंगदा है, कोई वी दुख नहीं मंगदा; पर माइक सुख नूं दुख रूपी फल बहुत लगदा है, आपणे मन दे पिछे तुरन वाले बंदे नूं इस भेत दी समझ नहीं आउुंदी, उुह दुनीआ वाले सुख ही मंगदा रहिंदा है ते नामु तों वाँजिआ रहिंदा है। असल विच दुनीआ दे सुख ते दुख इको जिहे ही समझणे चाहीदे हन। असल आतमक सुख ताँ मिलदा है, जेकर गुरू दे शबद दुआरा मन नूं विंनह लिआ जाए, मन नूं नथ पा के दुनीआ दे मौज मेलिआँ वलों रोक के रखिआ जाए। जेहड़ा मनुख गुरू दी सरन पै के आपणे आप नूं पछाणदा है, उुस दा मन बाहर भटकणों हट के अंतर आतमे विच टिक जाँदा, उुस दी हउुमै दूर हो जाँदी है, उुस दी त्रिशना मिट जाँदी है। जेहड़े मनुख अकाल पुरखु दे नामु विच रंगे जाँदे हन, उुनहाँ दे जीवन पवित्र ते रौशन हो जाँदे हन। गुरू दुआरा ही मनुख दी उुस पवित्र नामु जल नाल साँझ पैंदी है, ते मनुख दा सरीर पवित्र हो जाँदा है भाव, सारे गिआन इंद्रे विकाराँ दी मैल तों बचे रहिंदे हन। गुरू दी किरपा नाल उुह अकाल पुरखु जो कि मनुख दी

अंदरली वेदना जाणदा है, मनुख दे मन विच आ परगट हुंदा है। इस प्रकाश दी बरकति नाल मनुख दा मन सहज अवसथा विच टिक जाँदा है, ते अजेही सहज अवसथा तों मनुख दे मन अंदर बहुत आतमक आनंद उपजदा है। जिस तरहाँ साए पाणी नाल नहातिआँ सरीर दी मैल लहि जाँदी है, उसे तरहाँ अकाल पुरखु दे पवित्र नामु जल विच इशनान करन नाल मन विचों विकाराँ दी मैल निकल जाँदी है। इस लई, उस आतमक इशनान दी जतर अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करिआ कर ते इही विचारिआ कर कि, हे अकाल पुरखु! सिरफ तूं ही सदा थिर रहिंण वाला है, सिरफ अकाल पुरखु तूं ही पवित्र है, बाकी होर हरेक थाँ माइिआ दे मोह दी मैल नाल भरी होई है।

भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाहि ॥ निरमलु साचा इकु तू होरु मैलु भरी सभ जाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (५७)

जेहड़ा मनुख गुरू दी सरन नहीं पैंदा, उह मनुख आपणी खोटी मति दे कारन इह नहीं आख सकदा कि साडा इह सरीर, साडा इह मन, सभ कुझ उस अकाल पुरखु दा ही दि्ता होइिआ है। जदों अकाल पुरखु दी रज़ा हुंदी है, मनुख गुरू दी सरन पैंदा है, उस दा मन पवित्र हो जाँदा है, ते उस दे अंदरों हउमै दूर हो जाँदी है। उह मनुख आतमक अडोलता विच टिक के गुरू दे उपदेश दा आनंद माणदा है, गुरू दा उपदेश उस दे अंदरों त्रिशना दी अ्ग बुझा देंदा है। उह मनुख गुरू दे शबद विच रंगिआ जाँदा है, ते आतमक अडोलता विच लीन रहिंदा है।

जेहड़ा मनुख गुरू दी सरन विच आ जाँदा है, उस नूं अकाल पुरखु आप इह सूझ बज़श देंदा है, कि जिस स्चे सरोवर विच इशनान करना चाहीदा है, उह सदा काइिम रहिण वाला तीरथ, गुरू दा शबद ही है। गुरू दे शबद विचों ही अकाल पुरखु उस नूं अठाहठ तीरथ विखा देंदा है, ते सोझी बखश देंदा है, कि गुरू दा शबद ही असली तीरथ है, जिस विच नहातिआँ विकाराँ दी मैल लहि जाँदी है। उस मनुख नूं यकीन हो जाँदा है, कि गुरू दा शबद ही सदा काइिम रहिण वाला है, ते पवित्र तीरथ है, जिस विच इशनान करन नाल विकाराँ दी मैल नहीं ल्गदी। अजेहा गुरमुखि पूरे गुरू पासों सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी स्ची सिणति सालाह प्रापत कर लैंदा है।

सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाइे ॥ अठसठि तीरथु गुर सबदि दिखाइे तितु नातै मलु जाइे ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाइे ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाइे ॥५॥ (७५३)

गुरू साहिब समझाँदे हन कि, सतिगुरू दे शबद दी बरकति नाल मैं वैरागवान हो के, उदास हो के, अकाल पुरखु दे गुण गा रिहा हाँ, मैं अबिनासी अकाल पुरखु दे पिआर विच रंगिआ गिआ हाँ, ते सरब विआपक अकुल अकाल पुरखु दे चरनाँ विच पहुंच गिआ हाँ। हुण मैनूं वेद, शासतर, पुरान आदिक दे गीत कबि्त गावण दी लोड़ नहीं, किउंकि मैं अविनाशी टिकाणे वाले निरंकार विच जुड़ के, उस दे पिआरे विच इ्क रस हो के बंसरी वजा रिहा हाँ, भाव सबद दुआरा उस अकाल पुरखु दे गुण गाइिन कर रिहा हाँ। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बरकति नाल चंचल मन नूं रोक के मैं अकाल पुरखु दे चरनाँ विच टिकिआ होइिआ हाँ। इही मेरा इड़ा, पिंगला, सुखमना दा साधन है; मेरे लई ख्बी स्जी सुर इको जिही है (चंदु = ख्बी सुर इड़ा, सूरजु = स्जी सुर पिंगला), भाव, प्राण चाड़हने उतारने मेरे वासते इ्को जिही ग्ल है, ते अजेहे करम काँड मेरे लई बेलोड़े हन, किउंकि मैं अकाल पुरखु दी जोत विच टिकिआ बैठा हाँ। ना मैं तीरथाँ दे दरशन करदा हाँ, ना उनहाँ दे पाणी विच चुभी लाउंदा हाँ, ते ना ही मैं उस पाणी विच रहिण वाले जीवाँ नूं सताउंदा हाँ। मैनूं ताँ मेरे गुरू ने मेरे अंदर ही अठाहठ तीरथ विखा दि्ते हन। इस लई मैं आपणे अंदर ही आतम तीरथ उ्ते इशनान करदा हाँ।

बैरागी रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥१॥ रहाउ ॥ इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ चंदु सूरजु दुइि सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥२॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाइे घट ही भीतरि न्हाउगो ॥३॥ (६७२)

अकाल पुरख दी सिफत सालाह सुणन नाल ते अकाल पुरख दे नामु विच सुरत जोड़न नाल मनुख दे हिरदे विच भला करन दा सुभाउ, संतोख ते गिआन दा प्रकाश परगट हो जाँदा है। अकाल पुरख दी सिफत सालाह सुणन नाल मानो अठाहठ तीरथाँ दा इशनान हो जाँदा है, भाव, अठारठ तीरथाँ दे इशनान नामु जपण दे विच ही आ जाँदे हन। जो सतिकार मनुख वि्दिआ पड़ह के पाँदे हन, उह भगत जनाँ नूं अकाल पुरख दी सिफत सालाह सुणन नाल ते अकाल पुरख दे नामु विच जुड़न नाल ही मिल जाँदा है। अकाल पुरख दी सिफत सालाह सुणन नाल मनुख दा मन अडोल अवसथा विच टिकिआ रहिंदा है ते उस दा चित अकाल पुरख दे नामु विच लीन हो जाँदा है। अकाल पुरख दी सिफत सालाह सुणन ते अकाल पुरख दे नामु विच सुरत जोड़न वाले भगत जनाँ दे हिरदे विच सदा खिड़ाउ बणिआ रहिंदा है, किउंकि अकाल पुरख दी सिणति सालाह सुणन नाल मनुख दे दुखाँ ते पापाँ दा नास हो जाँदा है।

सुणिअै सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिअै अठसठि का इसनानु ॥ सुणिअै पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिअै लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिअै दूख पाप का नासु ॥१०॥ (३)

http://www.sikhmarg.com/2007/0218-sukh-dukh.html

अकाल पुरख दे नामु विच सुरत जोड़न नाल मनुख दा मन विशाल हिरदे वाला हो जाँदा है, लोड़वंदाँ दी सहाइता करन ते सबर संतोख वाला जीवन बण जाँदा है। अकाल पुरख दे नामु विच चुभी लाउंणी ही अठाहठ तीरथाँ दा इशनान है। मनुख नूं जगत दे किसे माण जाँ आदर सतिकार दी परवाह नहीं रहि जाँदी, उस दा मन सहजि अवसथा ते अडोलता विच टिकिआ रहिंदा है।

अनेकाँ रिशी, मुनी ते मोनधारी वेद पुराण आदिक धारमिक पुसतकाँ सुणा सुणा के अते सुण सुण के थ्क गइे, सभ तरहाँ दे भेखाँ वाले अनेकाँ साधू अठाहठ तीरथाँ ते भौं भौं के थ्क गइे, परंतू उह सभ अकाल पुरखु नूं प्रसंन नहीं कर सके। उह सदा थिर रहिण वाला पवित्र अकाल पुरखु सिरण मन दी पवित्रता नाल ही पतीजदा है। सारी स्रिशटी नासवंत है, पर हे अकाल पुरख तूं कदे बूढा नहीं हुंदा, तूम अती स्रेशट है, तूम मौत तों रहित है। तेरा नामु सारे रसाँ दा सोमा है, जेहड़ा जीव तेरा नामु प्रेम नाल जपदा है, उह आपणा व्डे तों व्डा दुख दूर कर लैंदा है। इस लइी अकाल पुरखु दा नामु ही पड़हना चाहीदा है, नामु ही समझणा चाहीदा है, ते गुरू दी स्रिखिआ लै के अकाल पुरखु दे नामु दुआरा ही पापाँ तों बचाउ हुंदा है। इह पूरी मति ते स्रेशट विचार पूरे गुरू दुआरा, पूरे गुरू दे शबद विच जुड़िआँ ही मिलदी है, कि अकाल पुरखु दा नामु ही अठाहठ तीरथाँ दा इशनान है, ते अकाल पुरखु दा नामु ही सारे पाप नास करन दे समरथ है।

तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइणु भाइि लै परहरि दुखु भारी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥२॥ (१००६)

अकाल पुरखु दा नामु जपदिआँ मनुख दा मन विकाराँ दे हनेरे विचों निकल के रौशन हो जाँदा है। अकाल पुरखु दा नामु चेते र्खण नाल हरेक किसम दा पाप सरीर तों दूर हो जाँदा है। अकाल पुरखु दा नामु चेते र्खण नाल मानो सारे तरहाँ दे पुरब मनाइे गइे। अकाल पुरखु दा नामु जपण नाल समझो कि अठाहठ तीरथाँ दा इशनान हो गिआ। गुरू साहिब समझादे हन कि अकाल पुरखु दा नामु ही साडा तीरथ है। सबद गुरू ने सानूं आतमक जीवन दी सूझ दा इह निचोड़ समझा द्ित्ता है, कि मनुख नूं थाँ थाँ ते जा के भटकण दी कोइी लोड़ नहीं, सभ कुझ अकाल पुरखु दे नामु दुआरा प्रापत हो सकदा है।

भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइिआ ॥ नामु लैत पापु तन ते गइिआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइिआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइिआ ॥१॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४२)

गुरू साहिब समझादे हन कि मैं अकाल पुरखु दे संत जनाँ दे चरनाँ दी धूड़ बण के रहिंदा हाँ, किउंकि संत जनाँ दी संगति विच मिल के रहिण नाल सभ तों उँचा आतमक दरजा प्रापत हो जाँदा है, ते अकाल पुरखु सभ थाईं विआपक द्िस पैंदा है। जिस मनुख ने व्डी किसमत नाल साध संगति प्रापत कर लइी, उस ने सभ थाँ भरपूर अकाल पुरखु दा नामु आपणे हिरदे विच वसा लिआ। फिर समझो उस ने सतिसंगत दे चरनाँ दी धूड़ विच इशनान कर के अठाहठ तीरथाँ दा इशनान कर लिआ।

वडै भागि सतसंगति पाइी हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाइे धूरि ॥२॥ (११६८)

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2010GurMag200703.pdf
http://www.sikhmarg.com/2007/0325-sadh-sangat.html

अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे तीरथ विच कीता होइिआ आतमक इशनान ही अठाहठ तीरथाँ दा इशनान है। जिस मनुख दीआँ अ्खाँ विच साध संगति दे चरनाँ दी धूड़ उुड के पैंदी है, उह धूड़, भाव साध संगति विच प्रापत कीती गइी सिखिआ, उस मनुख दे मन अंदरों विकाराँ दी सारी मैल दूर कर देंदी है।

तीरथि अठसठि मजनु नाइी ॥ सतसंगति की धूरि परी उुडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाइी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६३)

अकाल पुरखु दे नामु दी डूंघाइी बाहरले धारमिक भेखाँ जाँ पहिराविआँ नाल नहीं ल्भ सकदी, अते ना ही तीरथाँ ते इशनान कीतिआँ जाँ पुंन दान कीतिआँ ल्भ सकदी है। गुरू साहिब इही सवाल वेद पड़हन वालिआँ तों पुछदे हन, किउंकि धारमिक पुसतकाँ पड़हन नाल अकाल पुरखु दे नामु दी डूंघाइी बारे समझ नहीं पैंदी, जदों तक मनुख दा मन अकाल पुरखु दे नामु विच लीन नहीं हुंदा है। इही कारन है कि सारी लोकाइी माइिआ दे मोह विच ठ्गी जा रही है। अकाल पुरखु दे नामु दी कदर उुही मनुख करदा है, जिस नूं पूरा गुरू मिलदा है, किउंकि पूरे गुरू दुआरा ही अकाल पुरखु नाल डूंघी साँझ बणदी है।

भेखी हाथ न लभइी तीरथि नही दाने ॥ पूछउु बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥८॥६॥ ॥ (१०१२-१०१३)

शासत्र ते वेद पुंनाँ ते पापाँ दी विचार ही दूसदे हन, इिह दूसदे हन कि फलाणे कंम पाप हन, फलाणे कंम पुंन हन, जिनहाँ दे करन नाल मुड़ मुड़ कदे नरक विच ते कदे सुरग विच पै जाईदा है। ग्रिहसत विच रहिण वालिआँ नूं परिवारक चिंता तंग करदी रहिंदी है, ग्रिहसत दा तिआग करन वाले आपणे हंकार नाल आफरे होइे हन, ते निरे करम काँड करन वालिआँ दी जिंद माइिआ दे जंजाल विच फसी होइी है। जेकर किसे तीरथ उते जाउु, ताँ उथे इिही वेखिआ जाँदा है, कि लोक आपणे आप बारे हंकार विच इिही कहिंदे रहिंदे हन, कि "मैं धरमी हाँ, मैं धरमी हाँ"। जेकर पंडिताँ नूं जा के पुछदा हाँ, जाँ वेखदा हाँ, ताँ उह वी माइिआ दे रंग विच रंगे होइे हन। गुरू साहिब सवाल दे रूप विच पुछदे हन कि, हे मित्तर! मैनूं उह थाँ दूस जिथे हर वेले अकाल पुरखु दी सिफति सालाह हुंदी होवे। गुरू साहिब इिस दा उुँतर दे के समझादे हन कि, हे मित्तर! साध संगति विच रहि के सदा अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदे रहिणा चाहीदा है, किउंकि इिस दी बरकति नाल मन दे भरम, परिवारक मोह ते चिंता, हउमै, माइिआ दे जंजाल, आदिक, कोइी वी पोह नहीं सकदा, परंतू इिह असथान गुरू पासों लभदा है।

आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ त माइिआ राते ॥१॥ सो असथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ इिहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ (३८५)

जिवें कोइी दरज़ी कपड़ा माप के ते कट के मनुख दे सरीर वासते कमीज़ आदिक बणाँदा है, तिवें अकाल पुरखु ने जिंद ते सरीर दे मिलाप दा अवसर बणा के जिंद वासते इिह सरीर रूपी चोला बणा के दित्ता है। उस सरीर रूपी चोले नाल बेसमझ जीव परचिआ रहिंदा है। मनुख इिस सरीर नूं पालदा पोसदा रहिंदा है, ते सदा इिस दी साँभ संभाल करदा रहिंदा है। अंत दे वेले जीव इिस नूं छूड के उुँठ तुरदा है। अकाल पुरखु दे नामु तों बिना इिह सारा अडंबर नासवंत है। जेहड़े बंदे अकाल पुरखु दे भजन तों बिना होर पदारथाँ विच मसत रहिंदे हन, उह सारे माइिआ दे मोह विच ठ्गे जाँदे हन। माइिआ दे मोह दी इिह मैल तीरथाँ उते इिशनान कर के नहीं उतर सकदी। तीरथ इिशनान आदिक इिह सारे मिथे होइे धारमिक कंम हउमै दा खिलारा ही है। तीरथ इिशनान आदिक करमाँ राहीं आपणे धारमिक होण बारे लोकाँ दी तसली कराइिआँ उुँची आतमक अवसथा प्रापत नहीं हो सकदी। अकाल पुरखु दे नामु तों सखणे सभ जीव इिथों रो रो के ही जाणगे।

नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइिआ मूठु परानी ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथ नाइि न उतरसि मैलु ॥ करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ लोक पचारै गति नही होइि ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइि ॥२॥ (८९०)

जगत ने हउमै दी मैल दे कारन सदा दुख ही पाइिआ है, किउंकि माइिआ नाल पिआर होण करके जगत नमू विकाराँ दी मैल चंबड़ी रहिंदी है। जेकर मनुख सौ तीरथाँ उुँते वी इिशनान कर लवे, ताँ वी अजेहे किसे तरीके नाल इिह हउमै दी मैल, सरीर नूं धोण नाल मन विचों दूर नहीं हो सकदी। लोक कइी किसमाँ दे मिथे होइे धारमिक कंम करदे हन, इिस तरहाँ सगों अगे नालों दूणी हउमै दी मैल आ लगदी है। विदिआ आदिक पड़हन नाल वी इिह मैल दूर नहीं हुंदी, बेशक पड़हे होइे बंदिआँ नमू जा के पुछ लवो, भाव, पड़हे होइे लोकाँ दे मन अंदर उुँची पदवी जाँ विदिआ पड़हन दा हंकार ही बणिआ रहिंदा है। जदों मनुख दा मन गुरू दी सरन विच आउुंदा है, ताँ उस दा मन पवित्र हो जाँदा है। आपणे मन दे पिछे तुरन वाले बंदे राम राम आख आख के थक जाँदे हन, फिर वी हउमै दी मैल उुनहाँ पासों धोती नहीं जा सकदी।

सिरीरागु महला ३ ॥ जगि हउमै मैलु दुखु पाइिआ मलु लागी दूजै भाइि ॥ मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइि ॥ बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइि ॥ पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइि ॥१॥ मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइि ॥ मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइि ॥१॥ रहाउ ॥ (३६)

गुरू साहिब समझादे हन कि, मैं तीरथ उुँते जा के तद इिशनान कराँ जे इिस तरहाँ करन नाल उस अकाल पुरखु नूं ज़ुश कर सकाँ, परंतू जेकर इिस तरहाँ करन नाल अकाल पुरखु ज़ुश नहीं हुंदा, ताँ मैं तीरथ उुँते इिशनान करके की खटाँगा? अकाल पुरख दी पैदा कीती होइी जितनी वी दुनीआ मैं वेखदा हाँ, इिस विच अकाल पुरखु दी किरपा तों बिना किसे नूं कुझ नहीं मिलदा, ते ना ही अकाल पुरखु दी किरपा तों बिना कोइी कुझ लै सकदा है। जेकर सतिगुरू दी इिक सिखिआ वी सुण लइी जाइे, ताँ मनुख दी बुधी दे अंदर रतन, जवाहर ते मोती उपज पैंदे हन, भाव, मनुख दी बुधी दे अंदर अकाल पुरखु दे अनमोलक गुण पैदा हो जाँदे हन। हे सतिगुरू! मेरी आप जी अगे इिही अरदास है, कि मैनूं इिक अजेही समझ दिए, जिस करके मैनूं उह अकाल पुरख कदे ना विसरे, जिहड़ा सारे जीवाँ नूं दाताँ देण वाला है।

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइि करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लइी ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इिक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इिक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इिकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ (२)

जेहड़ा बंदा अकाल पुरखु नाल प्रीत पाँदा है, गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ नूं विचारदा है, उह अकाल पुरखु दा सेवक बण जाँदा है। अकाल पुरखु दा नामु चेते करन तों बिना, अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करन तों बिना,

अनेकाँ पुंन दान करन नाल जाँ अनेकाँ तीरथाँ ते इशनान करन नाल, कोइी वी जीव आपणे अंदरों विकाराँ दी मैल नहीं धो सकदा। हठ कर के, इंद्रिआँ नूं रोकण दा जतन कर के, जाँ घर बार छ्ड के ते जंगलाँ विच रहिंण नाल, कोइी मनुख उुँची आतमक अवसथा प्रापत नहीं कर सकदा, जदों तक उुह गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दा नामु नहीं चेते नहीं करदा। सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दा दरबार गुरू दे शबद दुआरा ही पछाणिआ जा सकदा है। गुरू दे शबद तों बिनाँ किसे होर आसरे दी झाक नाल, उुस अकाल पुरखु दे दरबार नूं लभिआ नहीं जा सकदा।

हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥ पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइि न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ नानक सच घुरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥३॥ ॥४॥२॥ (२४३)

अकाल पुरखु जीवाँ नूं आपणे गुणाँ दी दाति देण वाला है, पवित्र सरूप है। परंतू विकाराँ दे कारन जीवाँ दा मन पवित्र नहीं है, असीं पापी हाँ, गुणहीण हाँ। पवित्रता दा उुह गुण अकाल पुरखु पासों ही मिल सकदा है। जे जीव नूं गुरू मिल पइे, ताँ अकाल पुरखु दे गुणाँ दी बरकति नाल उुस नूं आतमक आनंद प्रापत हो जाँदा है, ते उुस दे मन विचों हंकार दूर हो जाँदा है। जे बहुत सारा बालण इिक्ठा कर लइीइे, ते उुस विच रता कु अ्ग पा देइीइे ताँ उुह सारा बालण सड़ के सुआह हो जाँदा है। ठीक इिसे तरहाँ जेकर अकाल पुरखु दा नामु इिक पल वासते वी मनुख दे मन विच व्स जाइे ताँ उुस मनुख दे सारे पाप नास हो जाँदे हन। जेकर पाणी नाल मल मल के सरीर नूं माँजीइे ताँ वी सरीर बाअद विच मैला हो जाँदा है। परंतू जेकर अकाल पुरखु दे गिआन रूपी जल विच, भाव अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित विच इिशनान करीइे, ताँ मन वी पवित्र ते सरीर वी पवित्र हो जाँदा है। जेकर देवी देवतिआँ दीआँ प्थर आदिक दीआँ मूरतीआँ दी पूजा करीइे, ताँ इिह कुझ वी नहीं दे सकदे, किउंकि इिनहाँ दे कोल खुद कुझ वी नहीं है, फिर इिनहाँ पासों की मंगिआ जा सकदा है। जेकर प्थर नूं पाणी नाल धोंदे रहीइे, ताँ वी उुस प्थर दे बणाइे होइे देवी देवते पाणी विच डुब जाँदे हन, फिर उुह आपणे पुजारीआँ नूं संसार रूपी समुंदर तों किवें तार सकदे हन।

सोरठि महला १ ॥ जलि मलि काइिआ माजीअै भाइी भी मैला तनु होइि ॥ गिआनि महा रसि नाइीअै भाइी मनु तनु निरमलु होइि ॥५॥ देवी देवा पूजीअै भाइी किआ मागउु किआ देहि ॥ पाहणु नीरि पखालीअै भाइी जल महि बुडहि तेहि ॥६॥ (६३७)

गुरू नानक साहिब नाल चरचा करदे समें, लोहारीपा जोगी ने जोग दा गिआन मारग इिउं द्सिआ है, कि असीं दुनीआ दे मेलिआँ, भाव, संसारक झंबेलिआँ तों व्खरे जंगलाँ विच, किसे रुख बिरख हेठ रहिंदे हाँ ते गाजर मूली खा के गुज़ारा करदे हाँ; तीरथाँ ते इिशनान करदे हाँ; इिस नाल सुख दा फल मिलदा है, ते मन नूं कोइी मैल वी नहीं ल्गदी। गोरखनाथ दा चेला लोहारीपा बोलिआ, कि इिही है जोग दी जुगती, जोग दी विधी। गुरू नानक साहिब जोगी नूं समझादे हन, कि असल गिआन दी विचार इिह है, कि दुनीआ दे धंधिआँ विच रहिंदिआँ होइिआ वी मनुख नूं नींद ना आवे, भाव, उुह दुनीआवी धंधिआँ विच ही ना त्रक हो जाइे, पराइे घर विच आपणे मन नूं डोलण ना देवे; परंतू अकाल पुरखु दे नामु तों बिना मन टिक के नहीं रहि सकदा ते माइिआ दी त्रिशना नहीं हट सकदी। जिस मनुख नूं सतिगुरू ने नामु विहाझण दा असली घर, असली टिकाणा विखा द्ता है, उुह दुनीआ दे धंधिआँ विच वी अडोल रहि के नामु विहाझदा रहिंदा है; उुस मनुख दी नींद वी घ्ट ते उुराक वी घ्ट दी लोड़ हुंदी है, भाव, उुह जीवन दे चसकिआँ विच नहीं पैंदा है।

हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उुदिआने ॥ कंद मूलु अहारो खाइीअै अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाइीअै सुखु फलु पाइीअै मैलु न लागै काइी ॥ गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साइी ॥७॥ हाटी बाटी नींद न आवै पर घरि चितु न डोलाइी ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकइी नानक भूख न जाइी ॥ हाटु पटणु घुरु गुरू दिखाइिआ सहजे सचु वापारो ॥ खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥ (६३८-६३९)

अफसोस दी गल इिह है, कि अ्जकल साडे गुरुदआरिआँ विच रवाइिताँ, जोग मत जाँ होर मृता दा परचार ताँ बहुत जिआदा हुंदा है, परंतू गुरमति दा खोज वाल गिआन बहुत घट समझाइिआ जाँदा है।

गुरू साहिब समझादे हन कि, मेरे वासते ताँ अकाल पुरखु दा नामु ही सभ तरहाँ दे सगन ते मुहूरत हन। दुनीआ दे सभ तरहाँ दे सुआद मेरे वासते अकाल पुरखु दा नामु ही है। अकाल पुरखु दा नामु जपणा ही मेरे लइी तीरथ इिशनान है, अकाल पुरखु दा नामु ही मेरे लइी तीरथाँ ते जा के सभ कुझ दान कर देणा है। जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दा नामु जपदे हन, उुह स्चे ते सुचे आचरन वाले बण जाँदे हन। जदों तों गुरू ने मेरे अंदर अकाल पुरखु दा नामु द्रिड़ह कीता है, उुदों तों अकाल पुरखु दा नामु ही मेरे वासते वेद शासत्र दी चरचा है अते जोगीआँ दी सिंडी वजाणा है। अकाल पुरखु दा नामु ही मेरे सारे कंम सिरे चाड़हदा है, अकाल पुरखु दा नामु ही मेरे वासते देवतिआँ दी पूजा है, अकाल पुरखु दा नामु ही मेरे वासते गुरू दी सेवा भगती करनी है। गुरू साहिब समझादे हन कि, पूरे गुरू ने मेरे हिरदे विच अकाल पुरखु दा नामु प्का करके टिका द्ता है, हुण मैनूं निशचा हो गिआ है, कि सभनाँ कंमाँ नालों अकाल पुरखु दा नामु सिमरन ही स्रेशट कंम है।

भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥ गुरि पूरै दिड़िए हरि नामु ॥ सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४५-११४६)

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/BookGuruGranthSahibAndNaam.pdf
http://www.sikhmarg.com/pdf-files/sggs-naam.pdf,
http://www.singhsabhacanada.com/wp-content/uploads/2017/09/Book-Guru-Granth-Sahib-and-Naam-20170901-1.pdf

किसे तरहाँ दे करम काँड जाँ तीरथ इशनान करन नाल मनुख दी काम वासना रोकी नहीं जा सकदी, मनुख दा मन डोलदा रहिंदा है, ते जीव नरक विच पिआ रहिंदा है। अकाल पुरखु दे नामु तों बिना जिंद विकाराँ विच सड़दी भुजदी रहिंदी है। जेहड़े मनुख गुरू दे शबद नूं आपणे विचार मंडल विच टिका के गुरू दे दसे मारग ते चलदे हन, उनहाँ दे मन ते सरीर विच, भाव, इंद्रिआँ विच पवित्रता आ जाँदी है। जिहड़ा मनुख उस अकाल पुरखु दा नामु जपदा है, उह मनुख आतमक आनंद प्रापत कर लैंदा है। अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़िआँ मनुख नूं मौत दा डर नहीं पोंह सकदा। जेहड़ा मनुख आपणे मन दी इकाग्रता वासते आपणे सरीर उते कोई धका जाँ ज़ोर करदा है, ते इस उदम दा माण वी करदा है, उह अकाल पुरखु नूं नहीं मिल सकदा। जेहड़ा मनुख लोक विखावे दी जतर धारमिक पुसतकाँ पड़हदा है, पुसतकाँ लै के लोकाँ नूं आपणा हंकार जिताण लई सुणाँदा है, तीरथ उते वी इशनान करन वासते जाँदा है, इस तरहाँ करन नाल उस दा कामादिक रोग दूर नहीं हो सकदा। अकाल पुरखु दे नामु तों बिना कोई मनुख आतमक आनंद नहीं माण सकदा है।

हठु अहंकारु करै नही पावै ॥ पाठ पड़ै ले लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥४॥ (६०५-६०६)

किसे तरहाँ दे राग गाण नाल, नाद वजाण नाल जाँ वेद आदिक धारमिक पुसतकाँ पड़हन नाल, अकाल पुरखु प्रसंन नहीं हुंदा है। अकाल पुरखु ना ही समाधी लाइआँ, गिआन दी चरचा कीतिआ जाँ जोग दा कोई साधन कीतिआँ प्रसंन हुंदा है। नित दे सोग कीतिआँ, जिवें स्रावग सरेवड़े करदे हन, उनहाँ नाल वी उह अकाल पुरखु प्रसंन नहीं हुंदा है। रूप, माल धन ते रंग तमाशिआँ विच रुझिआँ वी अकाल पुरखु जीव उते ज़ुश नहीं हुंदा है। तीरथ ते नहातिआँ जाँ नंगे घुमण नाल वी उह अकाल पुरखु नहीं भिजदा है। दान पुंन कीतिआँ वी अकाल पुरखु रीझदा नहीं, ते ना ही बाहर जंगलाँ विच सुंन मुंन अवसथा विच बैठिआँ, उह अकाल पुरखु पसीजदा है। जोधे लड़ाई विच लड़ के मरदे हन, इस तरहाँ करन नाल वी उह अकाल पुरखु प्रसंन नहीं हुंदा है। कई बंदे सुआह आदिक मल के मिटी विच लिबड़दे हन, इस तरहाँ करन नाल वी उह अकाल पुरखु ज़ुश नहीं हुंदा है। गुरू साहिब समझादे हन कि, अकाल पुरखु ताँ प्रसंन हुंदा है, जेकर सदा काइम रहिण वाले अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़ीइे, किउंकि जीवाँ दे चंगे मंदे होण दी परख, उनहाँ दे मन दी भावना अनुसार ही कीती जाँदी है।

महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपी मालंी रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ नमगि ॥ न भीजै दातंी कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥ (१२३७)

अकसर मनुख बेगाने लई पाप करदा है, बेगाने दी जान, माल ते इजत बारे बुरा सोच सकदा है। मनुख दा तन भावें संगत विच होवे, पर मन कुसंगत विच हो सकदा है। मनुख दा तन भावें कीरतन विच होवे, पर मन कूड़ कपट विच हो सकदा है। जे मनुख दा मन मैला है ताँ उस दा कीता होइआ जप तप वी मैला है। विकाराँ ते बुरी सोच करके मनुख दे मन अंदर मैल जाँदी रहिंदी है। अखाँ नाल पर धंन ते पर तन, जीभ नाल निंदा, कंन नाल चुगलीआँ सुणनीआँ, नक नाल सुगंधी अंदर जाँदी रहिंदी है। मनुख दी कलपना विच इही रहिंदा है, कि इह मेरा धंन है, उह मेरी संपती हो जावे।

जेहड़ा मनुख गुरू दे शबद विच जुड़ के आतमक जीवन हासल कर लैंदा है, उस दे अंदरों माइआ दे मोह नाल पैदा होण वाली मैल उतर जाँदी है, ते उस दा इह मन पवित्र हो जाँदा है। परंतू जेकर मनुख दा मन विकाराँ दी मैल नाल भरिआ रहे ताँ उह मनुख जो कुझ वी करदा है, सभ कुझ विकार ही करदा है, सरीर नूं तीरथाँ ते जा के इशनान कराण नाल मन पवित्र नहीं हो सकदा। परंतू इह संसार तीरथ इशनान करन नाल मन दी पवित्रता मिल जाण दे भुलेखे विच पै के गलत रसते वल जा रिहा है। कोई विरला मनुख ही इस सचाई नूं बुझ सकदा है ते समझण दी कोशिश करदा है। इस लई हे मेरे मन! तूं विकाराँ तों बचण लई सिरण इक अकाल पुरखु दा नामु जपिआ कर। इह अकाल पुरखु दा नामु रूपी ज्ञाना मैनूं सबद गुरू ने बजशिआ है।

वडहंसु महला ३ घरु १ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥ जपि मन मेरे तू इको नामु ॥ सतिगुर दीआ मो कउ इहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (५५८)

गुरू साहिब समझादे हन कि, अकाल पुरखु दे नामु दा वापार करन आइे हे जीव मित्र! ज़िंदगी दी रात दे दूजे पहर विच, भाव भर जवानी दे कारन जीव दी अकल इस तरहाँ हो जाँदी है, जिवें कोइी शराब विच गुट होवे। जीव दिन रात काम वासना विच दबिआ रहिंदा है, काम विच अंनहे होइे नूं अकाल पुरखु दा नामु आपणे चि्त विच टिकाण दी सुरति नहीं हुंदी। अकाल पुरखु दा नामु ताँ जीव दे हिरदे विच व्सदा नहीं, परंतू अकाल पुरखु दे नामु तों बिना, होर अनेकाँ तरहाँ दे मि्ठे कसैले रसाँ दा सुआद पछाणदा रहिंदा है। झूठे मोह विच फसे होइे जीव ने अकाल पुरखु नाल जाण पछाण पाण लइी कोइी गिआन ताँ हासल कीता नहीं, अकाल पुरखु दे चरनाँ विच आपणी सुरति टिकाइी नहीं, अकाल पुरखु दे गुण याद कीते नहीं, आपणीआँ इंद्रिआँ नूं विकाराँ वलों रोकण दा कोइी उुदम नहीं कीता, इस दा नतीजा इह होवेगा, कि अै जीव तूं जनम मरन दे गेड़ विच पै जावेगा। उुचा आतमक जीवन बणाण लइी सेवा सिमरन दे कंम करने ताँ दूर रहे, काम व्च मसत होइिआ जीव, तीरथ, वरत, सुचि, संजम, पूजा आदिक करम काँड दे धरम करम वी नहीं करदा। गुरू साहिब समझादे हन कि, अकाल पुरखु दे प्रेम दुआरा ही, अकाल पुरखु दी भगती दुआरा ही, इस काम वाशना तों जीव दा बचा हो सकदा है। परंतू अकाल पुरखु दी भगती ते सिमरन वलों दुचि्तापन र्खिआँ कामादिक दी शकल विच माइिआ दा मोह जीव उुपर ज़ोर पाँदा रहिंदा है।

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइि भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥ (७५)

जिस मनुख ने सदा थिर रहिंण वाले अकाल पुरखु दे नामु नूं आपणा नि्त दा नेम बणा लिआ है, नि्त दी कार बणा लिआ है, उुस नूं मौत दा डर नहीं सताँदा, उुस नूं आतमक मौत दा कोइी ज्तरा नहीं रहिंदा, गुरू दे शबद विच जुड़ के उुह आपणे अंदरले काम क्रोध ते काबू पा लैंदा है, ते अकाल पुरखु दे चरनाँ विच जुड़िआ रहिंदा है। शबद गुरू दे चरनाँ विच आपणी सुरति टिका के उुह सभ तों उुचा आतमक दरजा हासल कर लैंदा है। गुरू साहिब समझादे हन कि, हे जोगीए! तुसी बरणनी पहाड़ाँ दीआँ गुफाँ विच रहिंदे हो, पिंडे ते बिभूत मलदे हो, सिंङी वजाँदे हो। परंतू जेहड़ा मनुख बरण वरगे ठंडे ठार जिगरे वाले गुरू नूं मिल के आपणे अंदरों त्रिशना दी अ्ग बुझा लैंदा है; पिंडे ते सुआह मलण दी थाँ, जेहड़ा मनुख गुरू दी द्सी होइी सेवा विच आपणी सुरति टिकाइी र्खदा है; जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नाल भरपूर गुरू दी पवित्र बाणी सदा आपणे हिरदे अंदर वसाइी र्खदा है, ताँ मानो कि उुह असली नाद वजा लैंदा है, उुस ने असल भेख धारन कर लिआ है, ताँ फिर उुह सदा अडोल आतमक अवसथा विच टिकिआ रहिंदा है। जिस मनुख ने आपणे अंदर अकाल पुरखु नाल डूंघी साँझ पा लइी है, जिहड़ा मनुख सदा स्रेशट नामु महा रस पी रिहा है, जिस ने सतिगुरू दी बाणी दी विचार नूं अठाहठ तीरथाँ दा इशनान बणा लिआ है, जिस ने आपणे हिरदे नूं अकाल पुरखु दे रहिण लइी मंदर बणा लिआ है, ते अंतर आतमे उुस दी पूजा करदा है, अजेहा मनुख आपणी जोति नूं अकाल पुरखु दी जोति व्च मिला लैंदा है।

गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥४॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥५॥ (४११)

गुरू तों मिलण वाला अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित ही गुरू दे तीरथ दा जल है, गुरू तों मिले आतमक गिआन दे चानण विच मन दी चुभी लाउुंणा ही गुरू दे तीरथ दा इशनान है, गुरू दे तीरथ विच इशनान करन नाल अठाहठ तीरथाँ दे इशनान आपणे आप हो जाँदे हन। गुरू दे उुपदेश रूपी डूंघे गिआन विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे अनमोलक मोती ते जवाहर हन, ते जेहड़ा स्रिख गुरू दे अजेहे गिआन वाले तीरथ नूं सेंवदा है, उुस विच सरधा नाल आउुंदा है, उुह गिआन दे अनमोलक खजाने खोज के ल्भ लैंदा है। गुरू दे बराबर दा होर कोइी तीरथ नहीं है, ते उुह गुरू ही संतोख रूपी सरोवर है। गुरू इक अैसा दरिआ है, जिस पासों अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित मिलदा है, ते उुह अंम्रित अैसा जल है जो कि सदा साण रहिंदा है, जिस मनुख नूं उुह जल मिलदा है, उुस दी खोटी मति दी मैल दूर कर देंदा है। जेकर मनुख नूं गुरू मिल जावे ताँ गुरू दे नामु रूपी अंम्रित नाल भरे होइे दरिआ विच इशनान करन नाल मनुख दा पूरन इशनान हो जाँदा है, ते गुरू तों मिलण वाला आतमक गिआन मनुख नूं पसूआँ परेताँ वाली बिरती तों देवतिआँ वाली बिरती वाला सफल मनुख बणा देंदा है।

प्रभाती महला १ ॥ अंम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥ गुर उुपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥१॥ गुर समानि तीरथु नही कोइि ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउु सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइिऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥ (१३२८-१३२९)

कइी प्राणीआँ दे मन दी इ्छा हुंदी है, कि तीरथाँ ते जा के सरीरक चोला छ्डिआ जाइे, परंतू इस तरहाँ करन नाल वी मनुख दे मन विचों हउुमै हंकार नहीं घटदा है। मनुख भाँवें दिन ते रात, भाव, सदा तीरथाँ ते इशनान करदा रहे, फेर वी उुस दे मन दी मैल सरीर नूं पाणी नाल धोतिआँ नहीं उुतरदी। जेकर कोइी मनुख इस सरीर नूं साधन दी जतर, कइी तरहाँ दे जतन

वी करदा रहे, ताँ वी कदे उस दे मन तों माइआ दा प्रभाव नहीं हटदा। जेकर कोई मनुख इस नासवंत सरीर नूं कई वार पाणी नाल वी धोवे ताँ वी इह सरीर रूपी क्ची कंध किवे पवित्र हो सकदी है? गुरू साहिब आपणे मन नूं समझादे हन, कि, अकाल पुरखु दे नामु दी वडिआई बहुत व्डी है। अकाल पुरखु दे नामु दी बरकति नाल अणगिणत मंदे करम करन वाले मनुख विकाराँ तों बच जाँदे हन।

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ (२६५)

जिस मनुख दे मन विच अकाल पुरखु दा नामु व्स जाँदा है, उह मनुख गुरू दे शबद दुआरा आपणे मन दी, माइआ प्छि भटकण दी खेड मुका लैंदा है। इह मनुखा सरीर इक सरोवर दी तरहाँ है, जिहड़ा मनुख गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे चरनाँ विच आपणी सुरति जोड़ी र्खदा है, मानो, कि उह मनुख इस सरोवर विच इशनान कर रिहा है। जिहड़े मनुख गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे नामु विच इशनान करदे हन, उह पवित्र जीवन वाले हन, उनहाँ ने गुरू दे शबद दुआरा आपणे मन दी विकाराँ वाली मैल दूर कर लई है।

धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥१२॥ इहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥१३॥ नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥१४॥ (६०६)

जिहड़े मनुख आपणी रसना नाल अकाल पुरखु दा नामु उचारदे हन, उनहाँ दे सारे पाप नास हो जाँदे हन। उनहाँ मनुॅखाँ ने मानो क्रोड़ाँ रुपइे दान कर लइे, क्रोड़ाँ वारी तीरथ इशनान कर लइे हन ते अनेकाँ ही सुच ते पवित्रता दे साधन कर लइे हन।

सलोक ॥ कोटि दान इसनानम् अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥१॥ (७०६)

गुरू साहिब ने सानूं सचाई ते चलण लई प्रेरिआ है, ताँ जो असीं भरमाँ वहिमाँ दे जाल विचों बाहर निकल सकीइे। पाणी तों सारा संसार पैदा हुंदा है ते पाणी ही सारे जगत नूं नास करदा है, पाणी विच कई तरहाँ दे जीव पैदा हुंदे हन ते मरदे हन। हुण जरा कु विचारो कि इक पासे ताँ इह लोक सूतक दा प्रचार करदे हन, पर दूसरे पासे इह लोक पाणी दी चुलीआँ नाल आपणे आप नूं पवित्र कर रहे हन। हुण इह दोवें पासिउ किस तरहाँ ठीक हो सकदे हन, इक पासे ताँ जीवाँ दे जंमण मरन करके सूतक, भाव अपवित्रता कहिंदे हन ते दुसरे पासे पाणी नाल पवित्रता लिआउदे हन। मूंह नाल पाणी पीतिआँ त्रेह जरूर मिट सकदी है, परंतू पाणी नाल चुली कीतिआँ मन नहीं धुप सकदा। सुची चुली ताँ हो सकदी है, जेकर आपणे जीवन दा मंतव ते मनुखता प्रती फरज़ निभाइआ जावे। गुरू साहिब ने सानूं इस सबद विच मन दी सफाई ते सरीर दी सफाई दे फरक नूं विगिआनिक ढंग नाल समझाइआ है।

पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥२॥ (१२४०)

जिस मनुख उते अकाल पुरखु बज्शश करदा है, उह गुरू दे शबद दी विचार दुआरा इह पछाण लैंदा है, कि हरेक जीवातमा विच अकाल पुरखु मौजूद है। उह मनुख गुरू दे शबद विच जुड़ के आतमक जीवन देण वाली बाणी दी कदर समझ लैंदा है, ते आपणे अंदरों हउमै दे रोग नूं मुका लैंदा है। जेहड़ा मनुख तीरथाँ उते भटकदा फिरदा है, उस दा हउमै दा रोग दूर नहीं हुंदा है, पड़िहआ होइआ मनुख वी इस तों नहीं बचदा, उस नूं झगड़ा बहस ते वाद विवाद दे रूप विच हउमै दा रोग चंबड़िआ रहिंदा है। अकाल पुरखु तों बिना किसे होर आसरे दी झाक इक बड़ा भारी रोग है, इस दुबिधा विच फसिआ होइआ मनुख सदा माइआ दा मुथाज बणिआ रहिंदा है। जेहड़ा व्डभागी मनुख गुरू दी सरन विच आ जाँदा है, उह गुरू दे शबद विच जुड़ के सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदा है, उस दे मन विच सदा काइम रहिण वाला अकाल पुरखु सदा व्सिआ रहिंदा है, इस वासते उस दा हउमै दा रोग दूर हो जाँदा है। अकाल पुरखु दे भगत सदा पवित्र जीवन वाले हुंदे हन, किउंकि अकाल पुरखु दी मेहर नाल उनहाँ दे म्थे ते नामु सिमरन दा निशान चमकाँ रहिंदा है।

तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥८॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ नानक हरि जन अनदिनु निरमल जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥९॥१॥ (११५३-११५४)

जे मन विच विकाराँ दी मैल वी टिकी रहे, ते कोई मनुख तीरथाँ उुॅते नहाउंदा फिरे, ताँ इस तरहाँ करन नाल उस ने सुरग विच नहीं अ्पड़ सकना। तीरथाँ उुॅते नहाण नाल लोक ताँ कहिण ल्ग पैणगे कि इह भगत है, परंतू लोकाँ दे पतीजिआँ कोई लाभ नहीं हुंदा, किउंकि अकाल पुरखु जो कि हरेक दे दिल दी जाणदा है, उह अंञाणा नहीं है। इस लई सिरफ इक अकाल पुरखु दी पूजा करो, भाव इक अकाल पुरखु दा नामु चेते करो, किउंकि सिरफ उुही इक अकाल पुरखु असली देव है। गुर की सेवा ही असली तीरथ इशनान है, भाव गुरू दे सबद दी वीचार ते गुरू दे द्से राह उुॅते तुरना ही असली तीरथ इशनान

है। पाणी विच चुभी लाइआँ जेकर मुकती मिल सकदी होवे ताँ ड्डू ताँ सदा ही नहाउंदे रहिंदे हन। फिर जिवें उह ड्डू हन, तिवें उह मनुख समझो, परंतू नामु तों बिना उह सदा जूनाँ विच पइे रहिंदे हन। इस लइी असली स्चा नावणु, गुर की सेवा है, जिहड़ी कि गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा ही हो सकदी है।

आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानाँ ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥ पूजहु रामु इेकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे एइि नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥ (४८४)

जिस तरहाँ अ्ग नूं ठंडा करन लइी अते बुझाण लइी पाणी चाहीदा है। इिसे तरहाँ त्रिशना दी अ्ग शाँत करन लइी, नामु रूपी अंम्रित दी लोड़ है। जिस अंम्रित दे ज्ञाने दी जतर, अर्सी इिस जगत विच आइे होइे हाँ, उह अंम्रित गुरू पासों मिलदा है। इिस अंम्रित नूं पाउण लइी धारमिक भेखाँ दा पहिरावा छ्डो, मन दी चलाकी वी छ्डो। बाहरों शकल धरमीआँ वाली, ते अंदरों दुनीआँ नूं ठ्गण दी चलाकी, इिस दो रुजे चाल विच पिआँ, इिह अंम्रित रूपी फल नहीं मिल सकदा है। आपणे मन नूं समझाणा है कि अकाल पुरखु दे चरनाँ विच टिकिआ रहु, वेखीं किते नामु रूपी अंम्रित दी भाल विच बाहर ही भटकदा ना फिरी। जे तूम बाहर ढूंढण चल पिआ, ताँ बहुत दुख पावेंगा। अट्ल आतमक जीवन देण वाला रस तेरे घर विच ही है, तेरे हिरदे विच ही है। गुरू साहिब ताँ समझाउंदे हन, कि औगुण छ्ड के, गुणाँ नूं हासल करो। जे औगुण ही करदे रहाँगे ताँ पछुताउंणा पवेगा। तूम मुड़ मुड़ मोह दे च्िकड़ विच डुब रिहा है, तूम चंगे मंदे दी परख करनी नहीं जाणदा। जेकर मन अंदर लोभ दी मैल है ते लोभ दे अधीन हो के ठ्गी दे कंम करदे रहो, ताँ फिर बाहर तीरथ आदिकाँ ते इिशनान करन दा की लाभ हो सकदा है? अंदरली उुँची अवसथा ताँ ही बण सकदी है, जे गुरू दे द्से रसते उुते तुर के सदा अकाल पुरखु दा पवित्र नामु ज्पागे। आपणे मन नूं समझाणा है कि लोभ छ्ड, निंदिआ ते झूठ तिआग, किउंकि गुरू दे बचनाँ ते तुरिआँ ही सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित फल मिलेगा। इिस लइी अकाल पुरखु दे दर ते आप अरदास कर के बेनती कर कि, हे अकाल पुरखु! जिवें तेरी रज़ा है, तिवें मैनूं र्ख, परंतू मेरे ते इिह मिहर कर कि मैं गुरू दे शबद विच जुड़ के सदा तेरी सिणति सालाह करदा रहाँ।

सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आइे सो अंम्रितु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इिहु फलु नाही जीउ ॥१॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥२॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥३॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥४॥६॥ (५६८)

जेकर ह्थ पैर जाँ सरीर ल्िबड़ जावे, ताँ पाणी नाल धो के मैल उतारी जा सकदी है। जे कोइी क्पड़ा मल मूतर नाल गंदा हो जाइे, ताँ उुस नूं साबण ला के धोता जा सकदा है। परंतू जेकर मनुख दी बुधी पापाँ नाल मलीन हो जाइे, ताँ उुह पाप सिरफ अकाल पुरख दे नामु विच रंगिआँ ही धोते जा सकदे हन। पुंन जाँ पाप निरे कहिण वासते नहीं हन, बलकि जिहो जिहे करम करांगे, उुहो जिहे संसकार आपणे अंदर लिख के नाल लै जावांगे। जो कुझ अर्सी बीजांगे, उुस दे अनुसार फल वी अर्सी आप ही खावांगे। आपणे कीते होइे करमां अनुसार अकाल पुरख दे हुकमु अनुसार जनम मरन दे गेड़ विच पइे रहाँगे।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उुतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइि ॥ दे साबूणु लइीऐ एहु धोइि ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ एहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ (४)

गुरू नानक साहिब ने जपुजी साहिब दी पहिली पउुड़ी विच स्िख धरम दा मुढला सिधाँत, *'हुकमि रजाइी चलणा, नानक लिखिआ नालि'* समझा द्ित्ा है। दूजी पउुड़ी विच हुकमु दी विसथार समझाँदे होइे, हुकमु सबंधी ज़िकर आइिआ है, *'हुकमी उुतमु नीचु हुकमि लिखि दुखु सुखु पाइीअहि'*। हुण दूसरी पउुड़ी विच उुपरलीआँ तुकाँ वाला ज्िआल बिलकुल सप्शट समझाइिआ गिआ है, कि सारी स्रिशटी अकाल पुरख दे जस नियमाँ अनुसार च्ल रही है, ते इिनहाँ नियमाँ नूं गुरू नानक साहिब ने हुकमु द्सिआ है। अकाल पुरख दे नियम अजेहे हन, कि मनुख जिहो जिहे करम करदा है, उुहो जिहा फल पाँदा है। उुस दे आपणे अंदर उुहो जिहे ही चंगे मंदे संसकार बण जाँदे हन, ते उुनहाँ अनुसार जनम मरन दे गेड़ विच पिआ रहिंदा है। जेकर सबद गुरू दुआरा नामु दी सोझी मिल जावे ताँ, अकाल पुरख दी रज़ा विच तुर के मनुख आपणा जनम सफल कर सकदा है। माइिआ दे परभाव दे कारन मनुख विकाराँ विच पइिआ रहिंदा है, ते उुस दी मृत मैली हो जाँदी है। इिह मन दी मैल मनुख नूं अकाल पुरखु तों विछोड़ी र्खदी है, ते जीव दुखी हुंदा रहिंदा है। अकाल पुरखु दा नामु इिक अजेहा वसीला है, जिस नाल मन दी इिह मैल धुप सकदी है। गलास दे गंदे पाणी विच जे कर लगातार साफ पाणी पाउंदे रहीइे ताँ उुह वी

हौली हौली शुध हुंदा जाँदा है। इसे तरहाँ जे कर मृत विच लगातार नामु रूपी सच्ची बाणी पाउंदे रहीइे ताँ उह मृत विकार रहित हो जाँदी है। जाँ कहि लए कि जिस तरहाँ बूस विच सफर करन लई टिकट दी लोड़ हुंदी है, उसे तरहाँ अकाल पुरखु दे दर ते जाण लई अकाल पुरखु दी नामु रूपी टिकट दी लोड़ है।

जेहड़े मनुख राम दे दासाँ दे सरोवर विच, भाव साध संगति विच नामु रूपी अंम्रित बाणी नाल इशनान करदे हन, उनहाँ दे पिछले कीते होइे सारे पाप लहि जाँदे हन। अकाल पुरखु दी नामु रूपी बाणी नाल इशनान कर के उह पवित्र जीवन वाले बण जाँदे हन। परंतू इह बज्शश पूरे गुरू ने ही कीती हुंदी है। जिस मनुख ने गुरू दे शबद नूं वीचार के, ते गुरू दी सिखिआ नूं आपणी सोच मंडल विच टिका के, आतमक जीवन दे सारे गुण ठीक ठाक बचा लइे, ताँ समझो अकाल पुरखु ने उस दे हिरदे अंदर सारे आतमक सुख आनंद पैदा कर दि्ते हन। साध संगति विच टिकिआँ विकाराँ दी मैल उतर जाँदी है। साध संगति दी बरकति नाल अकाल पुरखु मनुख दा मददगार बण जाँदा है। जिस मनुख ने अकाल पुरखु दा नामु सिमरिआ, उस ने अकाल पुरखु नूं लभ लिआ, जो कि सभ दा मुढ है अते जिहड़ा सरब विआपक है।

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होइे करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइिए साथी ॥ नानक नामु धिआइिआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइिआ ॥२॥१॥६५॥ (६२५)

जेहड़ा मनुख तीरथाँ जा धारमक सथाना ते जा के निरा बाहरला सरीर धो लैंदा है, ते अंदरला मन विकाराँ नाल मैला ही रखदा है, उह लोक ते परलोक आपणे दोवें थाँ गवा लैंदा है, भाव आपणा वरतमान ते भविख दोवें ही विअरथ गवा लैंदा है, वरतमान विच रहिंदिआँ होइिआ उह काम वाशना विच, क्रोध विच, मोह विच, फसिआ रहिंदा है, अगाँह भविख विच जा के फिर उह मानसिक ते सरीरक रोगा करके हटकोरे लै लै के रोंदा रहिंदा है। गुरू साहिब समझादे हन कि, अकाल पुरखु दा भजन करन वाली अकल होर किसम दी हुंदी है, उस विच किसे तरहाँ दा विखावा नहीं हुंदा है। जेकर मनुख अकाल पुरखु दा नामु नहीं सुणदा, जेकर नामु वलों बोला रहिंदा है ताँ बाहरले धारमक करम इिउं ही हन, जिवें सप नूं मारन दे थाँ सप दी खुड नूं कुटी जाणा है। जेकर खुड नूं कुटदे जाइीइे ताँ इिस तरहाँ सप नहीं मरदा, ठीक इिसे तरहाँ बाहरले करम काँड करन नाल मनुख दा मन वस विच नहीं आउंदा।

आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइि अंतरु मनु मैला दुइि ठुरु अपुने खोइे ॥ इीहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोइे ॥१॥ गोविंद भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरइी नामु न सुनइी डोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३८१)

गुरू साहिब समझादे हन कि, आपणे सरीर नूं अठाहठ तीरथ असथाना ते जा के धो लैणाँ तीरथ इिशनान नहीं है। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे तीरथ विच कीता होइिआ आतमक इिशनान ही असली इिशनान है। जिस मनुख दीआँ अखाँ विच साध संगति दे चरनाँ दी धूड़ उुँड के पैंदी है, उह धूड़ उुस दे अंदरों विकाराँ दी सारी मैल दूर कर देंदी है। भाव साध संगति विच रहि के सिखी होइी जीवन जाच, उुस मनुख दे मन अंदरों सारे विकार दूर कर देंदी है ते उुस दा मनुखा जनम सफल हो जाँदा है।

तीरथि अठसठि मजनु नाइी ॥ सतसंगति की धूरि परी उुडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाइी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६३)

हे अकाल पुरखु! जे तैनूं आपणे सेवक नाल कंम है भाव, जे तूम मैनूं आपणे चरनाँ विच जोड़ी रखणा है ताँ मेरा इिक शंका दूर कर दे, किउंकि इिह शक मैनूं तेरे चरनाँ विच जुड़न नहीं देवेगा। की इिह मन बलवान है जाँ इिस तों वधीक बलवान उह अकाल पुरखु है, जिस नाल इिह मन पतीज जाँदा है ते भटकणों हट जाँदा है? की अकाल पुरखु सतिकार जोग है, जाँ उुस तों वधीक सतिकार जोग उह महाँपुरख है, जिस ने अकाल पुरखु नूं पछाण लिआ है? की ब्रहमा वडा है, जाँ उुस तों वधीक उह अकाल पुरखु है, जिस दा पैदा कीता होइिआ इिह ब्रहमा है? की वेद आदिक धरम पुसतकाँ दा गिआन सिर निवाउुण जोग है जाँ उुह महाँपुरख जिस तों इिह गिआन मिलिआ? कबीर जी आखदे हन, कि मेरे मन विच इिह शक उुँठ रिहा है, कि तीरथ असथान पूजण जोग है जाँ अकाल पुरखु दा उुह भगत वधीक पूजण जोग है, जिस दा सदका उुह तीरथ बणिआ।

***गउड़ी ॥** झगरा इेकु निबेरहु राम ॥ जउु तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु मनु बडा कि जा सउु मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥१॥ ब्रहमा बडा कि जासु उुपाइिआ ॥ बेदु बडा कि जहाँ ते आइिआ ॥२॥ कहि कबीर हउु भइिआ उुदासु ॥ तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥४२॥ (३३१)*

इिस शबद दुआरा कबीर जी ने धारमिक रसते विच वापरन वाले कइी तरहाँ दे भुलेखे दूर कीते हन, 'मैं ब्रहम हाँ, मैं रब हाँ', इिह जि्आल मनुख नूं हउुमै वल लै जाँदा है। इिस 'मैं', भाव इिस 'मन' नूं बेअंत अकाल पुरखु विच लीन करना ही जीवन दा सही मारग है। अकाल पुरखु नाल मिलाप ताँ संभव हो सकेगा, जेकर सतिगुरू अगे आपा वारिआ जाइे। सभ देवतिआँ दा सिरताज ते सिरजणहार, उुह अकाल पुरखु खुद आप ही है। इिस लइी निरा 'गिआन' ही काणी नहीं, गिआन दे दाते सतिगुरू

नाल पिआर बणाउणा वी बहुत ज़रूरी है। असली तीरथ 'सतिगुरू' है, जिस नाल पिआर करन सदका, उह गिआन प्रापत हुंदा है, जिहड़ा मनुख नूं अकाल पुरखु नाल जोड़ देंदा है।

सतिगुर दी सिखिआ अनुसार अनेकाँ सि्ख गुरू अमरदास साहिब दे दू्से मारग ते च्लदे सन। हरेक खिन खिन, निमख निमख, कदम कदम ते हर रोज़ अकाल पुरखु दी भगती दा अवसर बणिआ रहिंदा सी। सदा अकाल पुरखु दी भगती दा उुँदम बणिआ रहिंदा सी, ते बहुत सारी लुकाइी गुरू अमरदास साहिब दा दरसन करन आउुंदी सी। जिनहाँ वडभागी मनुखाँ ने सतिगुरू दा दरसन कीता, अकाल पुरखु ने आप उुनहाँ नूं आपणे चरनाँ विच जोड़ लिआ, भाव, जिहड़े मनुख सतिगुर गुरू दा दरसन करदे हन, उुनहाँ नूं अकाल पुरखु आपणे नाल मिला लैंदा है। बहुत सारी लुकाइी तीरथाँ उुते इिक्ठी हुंदी सी, ते उुनहाँ नूं त्रलत रसते तों बचाण लइी ते उुनहाँ दा उुधार करन लइी सतिगुरू ने तीरथाँ उुते जाण दा उुँदम कीता सी। जिथे वी गुरू अमरदास साहिब जाँदे सी, उुनहाँ दे नाल बहुत सारे सि्ख उुस लंमे पैंडे विच उुनहाँ नाल जाँदे सन, ते सतिगुर दी सिखिआ अनुसार अनेकाँ सि्ख गुरू अमरदास साहिब दे दू्से मारग ते च्लदे सन।

मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ अनदि्नु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइिआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइिआ ॥ तीरथ उुदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उुधरण अरथा ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥२॥ (१११६)

जेकर लोक खोटे मन नाल तीरथाँ ते नहाउुण लइी तुर पइे अते सरीर विच कामादिक चोर वी उुसे तरहाँ टिके रहे, ताँ अजेहे नहाउुण दी की लाभ है। तीरथाँ ते नहाउुण नाल इिक हि्सा, भाव सरीर दी बाहरली मैल ताँ लहि गइी, परंतू मन विच हंकार आदिक दी दूणी मैल होर चड़ह गइी, कि मैं कइी तीरथाँ ते इिशनान कर आइिआ हाँ। अजेहे मनुखाँ दा तुंमी वाला हाल ही होइिआ, तुंमी बाहरों ताँ धोती गइी, पर उुस दे अंदर निरोल विसु, भाव कौड़तण उुसे तरहाँ ही टिकी रही। गुरू साहिब समझादे हन कि, भले मनुख तीरथाँ ते नहाउुण तों बिना ही चंगे हन, ते चोर तीरथाँ ते नहहा के वी चोर ही रहिंदे हन।

मः १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इिकु भाउु लथी नातिआ दुइि भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥२॥ (७८६)

कइी लोक बाहरों ताँ धारमिक करम करन वाले दि्सदे हन, परंतू मन विच विकाराँ दी मैल नाल भरे हो सकदे हन, अजेहे लोक सिरण वेखण नूं ही पवित्र जापदे हन। जेहड़े बंदे बाहरों पवित्र दि्सण, ते मन अंदरों विकारी होण, उुनहाँ ने आपणा जीवन इिउुं विअरथ गवा लिआ समझो, जिवें कोइी जुआरीआ जूइे विच धन हार के आउुंदा है। उुनहाँ नूं अंदरो अंदर माइिआ दी त्रिशना दा भारा रोग खाइी जाँदा है, माइिआ दे लालच विच मौत नूं उुनहाँ ने भुलाइिआ हुंदा है। लोकाँ दीआँ नज़राँ विच धारमिक दि्सण वासते अजेहे लोक आपणे बाहरों धारमिक दि्सदे करमाँ दी वडिआइी दू्सण लइी वेद आदिक धारमिक पुसतकाँ विचों हवाले देंदे हन, पर वेद आदिक धारमिक पुसतकाँ विच जो अकाल पुरखु दा नामु जपण दा उुँतम उुपदेश है, उुस वल उुह धिआन नहीं करदे, ते भूताँ वाँग जगत विच विचरदे रहिंदे हन, ते असली जीवन दी जाच तों खुंझे रहिंदे हन। गुरू साहिब समझादे हन कि, जिनहाँ ने अकाल पुरखु दे स्चे नामु नूं छ्डिआ होइिआ है, ते जिहड़े विकाराँ विच फसे होइे हन, उुनहाँ ने आपणी जीवन दी खेड जूइे विच हार लइी समझो।

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूअै हारिआ ॥ इेह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उुतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूअै हारिआ ॥१६॥ (६१६)

निरे बाहरों धारमिक दि्सदे करम करन नाल मन विच विकाराँ दी मैल उुसे तरहाँ टिकी रहिंदी है, ते मन नूं माइिआ दे मोह दा रोग चंबड़िआ रहिंदा है। फिर ज्थे रोग है, उुथे आनंद किस तरहाँ हो सकदा है? इिस लइी गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे स्चे नामु नूं सदा चेते करदे रहो। इिही है मन दी अरोगता दा असली वसीला, ते आतमक आनंद हासल करन वाला मारग।

हे पखंडी मनुख! तेरे मन विच ताँ ठ्गी है, परंतू तूम मूंहों ब्रहम गिआन दीआँ ग्लाँ कर रिहा है। तैनूं इिस तरहाँ पाणी रिड़कण नाल कोइी लाभ नहीं हो सकदा। जेकर हिरदे विच कूड़ कपट दी मैल भरी होइी है, ताँ इिस तरहाँ आपणे सरीर नूं बाहरो माँजण दा कोइी णाइिदा नहीं। लोड़ है आपणे आप नूं अंदरों साफ करन दी, मन विचों विकार क्डण दी, बाहरों सुचा ते पवि्तरता र्खणा इिक धोखा है। जेकर लउुकी अठाहठ तीरथाँ उुँते वी इिशनान कर लइे, ताँ वी उुस दी अंदरली कुड़तण दूर नहीं हुंदी। इिस अंदरली मैल नूं दूर करन लइी कबीर जी ताँ सोच विचार के अकाल पुरखु अ्गे इिही अरदास करदे हन, कि हे अकाल पुरखु! तूम मैनूं इिस संसार रूपी समुंदर तों पार लंघा लै। इिस सबद विच कबीर जी इिही समझादे हन कि, मन दी मैल तीरथ इिशनान जाँ गिआन चरचा करन नाल दूर नहीं हुंदी, इिस दा इिलाज इिको ही है, कि निमाणे हो के अकाल पुरखु दे दर ते ढहि पैणा है।

हिदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥ काँइआ माँजसि कउन गुनाँ ॥ जउ घट भीतरि है मलनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥२॥ कहि कबीर बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥३॥८॥ (६५६)

जिहड़े मनुख सवेरे ते शाम, भाव, दोवें वेले निरा इशनान ही करदे हन ते आपणे आप नूं समझदे हन, कि असीं पवित्र हो गइे हाँ, ताँ उह इउं हन, जिवें पाणी विच ड्डू वस रहे हन, किउंकि ड्डू वी दिन विच कइी वारी इशनान करदे रहिंदे है। परंतू जेकर उनहाँ मनुखाँ दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे नामु दा पिआर नहीं है, ताँ उह सारे धरमराज दे वस पैंदे हन।

गउड़ी कबीर जी ॥ संधिआ प्रात इसनानु कराही ॥ जिउ भइे दादुर पानी माही ॥१॥ जउ पै राम राम रति नाही ॥ ते सभि धरम राहि कै जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (३२४)

तीरथाँ ते इशनान, कइी तरहाँ दे भेख, वेद आदिक धरमिक पुसतकाँ दे निरे पाठ, अजिहा कोइी करम वी सचा सुख नहीं दे सकदा। जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे नामु दा पिआर नहीं, उस ने जमाँ दे ही वस पैणा है। असली उँदम उह है, कि पंजे विकाराँ ते काबू करके अकाल पुरखु दा नामु आपणे हिरदे विच वसाइीइे अते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार जीवन बतीत करीइे।

उस गुरू दे चरनाँ दा धिआन ही जिंद वासते संसार रूपी समुंदर तों पार लंघण लइी वसीला हन, जिस गुरू ने आपणी सरन विच आइे मनुख नूं इिक छिन विच संसार रूपी समुंदर तों पार लंघा दित्ता। कोइी मनुख धारमिक रसमाँ दा प्रेमी बण जाँदा है, ते कोइी मनुख तीरथाँ उँते इशनान करदा फिरदा है, परंतू अकाल पुरखु दे दासाँ ने सदा अकाल पुरखु दा नामु ही धिआइिआ है। गुरू साहिब समझादे हन कि, दास नानक वी उस अकाल पुरखु दा नामु सिमरदा है, जिहड़ा सभ दे दिलाँ दी जाणन वाला है, सभ दा मालक है, ते जीवाँ दे माइिआ दे बंधन कटण दी समरथा रखदा है।

धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥१॥ रहाउ ॥ कोइी होआ क्रम रतु कोइी तीरथ नाइिआ ॥ दासंी हरि का नामु धिआइिआ ॥१॥ बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥२॥३॥५७॥ (६८४)

भगत कबीर जी समझादे हन कि, मैं काबे दा हज करन जा रिहा साँ, उथे गइे नूं अगों उदा मिल पिआ! उह मेरा साईं उदा उश होण दे थाँ कि मैं उस दे घर दा दीदार करन आइिआ हाँ, सगों मेरे उते गुसे होइिआ ते आखण लगा कि मैं ताँ इिह हुकम दित्ता ही नहीं सी, कि तूं मेरे नाँ ते गाँ आदिक दी कुरबानी देवेंगा, ते मैं तेरे गुनाह बज्श दिआँगा। हे साईं! मैं कइी वारी, तेरे घर काबे दा दीदार करन लइी गिआ हाँ, परंतू, हे उदा! तूम मेरे नाल गल ही नहीं करदा, मेरे विच तूम की ज्ता वेख रिहा हैं? जो हज अते कुरबानी नाल वी मैं बजशिआ नहीं गिआ? इिह धिआन विच रखणा है कि कबीर जी मुसलमान नहीं सन, उह हिंदू जुलाहा सन। सो उनहाँ नूं हज ते जाण दी कोइी लोड़ नहीं सी, किसे होर दी उकाइी नूं यकीनी तौर ते तसली नाल समझाण लइी इिह इिक तरीका है कि आपणे आप नूं वी उही कंम करदा ज़ाहर कीता जाँदा है। भगत कबीर जी इिनहाँ दोवाँ सलोकाँ विच समझादे हन, कि हज अते कुरबानी नाल उदा उश नहीं हुंदा। लोक धका कर के गाँ आदिक जीवाँ नूं मारदे हन; पर आखदे इिह हन, कि इिह ज़बह कीता होइिआ मास उदा दे नामु ते कुरबानी दे लाइिक हो गिआ है, जदों सभ जीवाँ नाल पिआर करन वाला उदा इिनहाँ लोकाँ पासों अमलाँ दा लेखा मंगेगा, ताँ इिनहाँ दा की हाल होवेगा? किउंकि, कुरबानी दित्तिआँ गुनाह बज्शे नहीं जाँदे। इिह धिआन विच रखणा है, कि इिथे मास खाण जाँ ना खाण ते बहस नहीं हो रही है। कबीर जी सिरण इिह आखदे हन कि कुरबानी देण वाले खा पी ताँ आप ही जाँदे हन, पर परज़ इिह कर लैंदे हन, कि उदा दे अगे भेट कीता गिआ है, ते उदा ने साडे पाप बज्श दित्ते हन। उदा नूं उश करन दी थाँ, इिह ताँ उस नूं सगों नाराज़ करन वाली गल है। जो वी मनुख किसे उते धका करदा है, ज़ुलम करदा है ताँ ज़ुलम दा लेखा उदा मंगदा है। कीते गुनाहाँ नूं 'कुरबानी' दे के धोता नहीं जा सकदा। उह उदा मनुख पासों सिरण दिल दी पाकीज़गी दी कुरबानी मंगदा है, जेकर मनुख दे दिल दी पवित्रता काइिम होवे ताँ आपणे कीते अमलाँ दा लेखा देणा सौखा हो जाँदा है।

कबीर हज काबे हउ जाइि था आगै मिलिआ खुदाइि ॥ साँई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किनि फुरमाइी गाइि ॥१९७॥ कबीर हज काबै होइि होइि गइिआ केती बार कबीर ॥ साँई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥१९८॥ (१३७५)

बाबा फरीद जी समझादे हन कि, हरेक जंगल नूं गाहण दा की लाभ है? जंगल विच कंडे किउं लताड़दा फिरदा हैं? रब ताँ तेरे हिरदे विच वसदा है, जंगल विच भालण दा की णाइिदा? इिनहाँ निकीआँ निकीआँ लताँ नाल जवानी वेले मैं थल ते पहाड़ गाह आउंदा रिहा हाँ, परंतू अज बुढेपे विच मैनूं इिह थोड़ी दूर पिआ होइिआ लोटा वी सौ कोह दूरी दी तरहाँ लग रिहा है। फरीद जी चितावनी दे समझादे हन, कि बंदगी दा वेला वी जुआनी दा ही है, जदों सरीर कंम काज कर सकदा है। जेकर जुआनी विच हुकमु ते रजा अनुसार चलाँगे ताँ बुढेपा आपणे आप सुखाला हो जावेगा।

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥१९॥ फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविएमि ॥ अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहाँ थीएमि ॥२०॥ (१३७८)

आम वेखण विच आउंदा है कि कई मनुख सतिगुर दे सुचे तीरथ नूं छड के अठाहठ तीरथाँ ते नावण लई जाँदे हन। उथे बगले दी तरहाँ अखाँ मीट के दिखावे करन लई समाधी लाउंदे हन। जिस तरहाँ बगला पाणी विच मछीआँ नूं घुट घुट के फड़दा ते खाँदा है, उसे तरहाँ अजेहे मनुख आम जनता नूं धोखे नाल लुटदे हन ते उनहाँ दा खून चूसदे हन। जिस तरहाँ हाथी नूं पाणी नाल नहाउण तों बाअद, उह बाहर निकल के आपणे सरीर उपर खेह उडा के पाँदा है, तीरथाँ ते जाण वालिआँ दा वी उही हाल है, उह तीरथाँ ते जा के इक पाप नूं ताँ उतार लिआ समझदे हन, ते आपणे अंदर होर हंकार पैदा करन दे नाल नाल, होर कई पाप चड़हा लैंदे हन। जिस तरहाँ नदी दे पाणी विच तूंबड़ी डुबदी नहीं ते उस दी कुड़तण उसे तरहाँ काइम रहिंदी है, ठीक उसे तरहाँ तीरथ मनुख दे मन अंदर पापा दे नाल भरे होइे जहिर नूं दूर नहीं कर सकदे। पॅथर नूं पाणी विच जिंनाँ चिर मरजी पिआ रहिंण दिए, उस ते पाणी दा कोई असर नहीं हुंदा है, पॅथर उसे तरहाँ कठोर ही रहिंदा है। ठीक इसे तरहाँ तीरथाँ ते जाण नाल मनुख दा कठोर मन भिज नहीं सकदा। करम काँडाँ दे भंभल भूसिआँ विच पइे होइे मनमुख दे भरम दूर नहीं हुंदे, ते उह इधर उधर भरमाँ विच भौदा रहिंदा है। भाई गुरदास जी समझादे हन, कि पूरे गुरू तों बिनाँ मनुख दे मन अंदरों विकारा दी मैल नहीं उतर सकदी ते उस दा पार उतारा नहीं हो सकदा।

सतिगुर तीरथ छडकै अठसठि तीरथ नावण जाहीं॥ बगल समाध लगाइके जिउं जल जंताँ घुट घुट खाहीं॥ हसती नीर नवालीअनि बाहर निकल खेह उडाहीं॥ नदी न डुबै तूंबड़ी तीरथ विस निवारै नाहीं॥ पॅथर नीर पखालीऐ चिॅत कठोर न भिजै काहीं॥ मनमुख भरम न उतरै भंभल भूसे खाइ भवाहीं॥ गुर पूरे विण पार न पाहीं ॥१०॥ (१५-१०-७)

जे कर उपर लिखीआँ, गुरबाणी दीआँ सिखिआवाँ, नूं इकठा करीइे ताँ असीं संखेप विच कहि सकदे हाँ कि

Top Brief Conclusion

- जेकर लख वारी वी इशनान आदिक नाल सरीर दी सुच रखी जावे, ताँ वी इस तरहाँ सुच रखण नाल मन दी सुच नहीं हो सकदी। अकाल पुरखु नालों जीव दी विथ मिटाण दा इको ही तरीका है कि जीव उस दे हुकमु ते रज़ा विच चले। सिख धरम दा मुढला सिधाँत वी "*हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि*", ही है, जिस दा जिकर गुरू नानक साहिब ने जपुजी साहिब ते गुरू गरंथ साहिब दे आरंभ विच ही कर दिता है।
- जिहड़े मनुख मन अंदरों ताँ झूठे हन, परंतू बाहरो झूठी इज़्ज़त बणाइी रखदे हन, ते जगत विच विखावा करदे रहिंदे हन, उह भावें अठाहठ तीरथाँ उुंते जा के इशनान कर लैंण, ताँ वी उनहाँ दे मन विचली विकाराँ दी मैल कदे नहीं उतरदी।
- हुण सवाल पैदा हुंदा है कि जेकर गुरबाणी अनुसार अठाहठ तीरथाँ उुंते जा के इशनान कर लैंण नाल, मन विचली विकाराँ दी मैल कदे नहीं उतरदी ताँ फिर सिखाँ दा पंज तखताँ जाँ बहुत सारे गुरदुआरिआँ दी यातरा करन नाल जाँ इशनान करन नाल मन दी मैल किस तरहाँ उतर सकदी है?
- **गुरू नानक साहिब ने किसे वी तरीके दी रवाइत प्रवान नहीं कीती है ते ना ही किसे तीरथ असथान ते जा के इशनान करना प्रवान कीता है, बलकि गुरसिख वासते तीरथ दी परिभाशा ही बदल दिती है। सपशट तौर ते कहि दिता कि तीरथु, अकाल पुरखु दा नामु ही है, ते गुरू दे शबद दी वीचार दुआरा अकाल पुरखु दे गिआन नूं आपणे हिरदे विच टिकाणा ही असली तीरथु इशनान है।**
- बहुत सारे गुरदुआरा साहिबाँ विच वख वख तीरथाँ उते जा के इशनान करन दे जाँ यातरा करन दे कई बोरड मिलणगे, पर नामु दे इशनान करन दा किते कोई बोरड नहीं मिलेगा, "**तीरथु नामु है**"। खाली वाहिगुरू वाहिगुरू दा रटन करवाउंण वाले ताँ बहुत मिलणगे, परंतू, "**तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है**" दी वीचार करन वाला कोई विरला ही मिलेगा।
- **गुरबाणी अनुसार तीरथु नामु है, सबद दी बीचारु दुआरा आपणे हिरदे अंतरि हासल कीता गिआनु ही असली तीरथु है। इस लई गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा पैदा होइिआ अंतर गिआनु ही नामु है।**
- गुरू साहिब समझाँदे हन कि मैं अनेकाँ ही लोक नूं अजेहे मिथे होइे धारमिक करम करदे वेखिआ है, परंतू इनहाँ तरीकिआँ नाल अकाल पुरखु दे चरनाँ विच जुड़िआ नहीं जा सकदा। मैं ताँ इनहाँ करम काँडाँ दा आसरा छड के मालक अकाल पुरखु दे दर ते आ ढिगा हाँ ते अरज़ोई करदा रहिंदा हाँ, कि हे अकाल पुरखु! मैनूं बिबेक बुधी वाली अकल दे ताँ जो मैं चंगे बुरे दी परख कर सका।
- जिस तरहाँ साण पाणी नाल नहातिआँ सरीर दी मैल लहि जाँदी है, उसे तरहाँ अकाल पुरखु दे पवित्र नामु जल विच इशनान करन नाल मन विचों विकाराँ दी मैल निकल जाँदी है।

- जेहड़ा मनुख आतमक अडोलता विच टिक के गुरू दे उपदेश दा आनंद माणदा है, गुरू दा उपदेश उस दे अंदरों त्रिशना दी अ्ग बुझा देंदा है। उह मनुख गुरू दे शबद विच रंगिआ जाँदा है, ते आतमक अडोलता विच लीन रहिंदा है।
- जिस स्चे सरोवर विच इशनान करना चाहीदा है, उह सदा काइम रहिण वाला तीरथ, गुरू दा शबद ही है। गुरू दे शबद विचों ही अकाल पुरखु उस नूं अठाहठ तीरथ विखा देंदा है, ते सोझी बखश देंदा है, कि गुरू दा शबद ही असली तीरथ है, जिस विच नहातिआँ विकाराँ दी मैल लहि जाँदी है। अजेहा गुरमुखि पूरे गुरू पासों सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी स्ची सिणति सालाह प्रापत कर लैंदा है।
- गुरू ने मेरे अंदर ही अठाहठ तीरथ विखा दि्ते हन। इस लई मैं आपणे अंदर ही आतम तीरथ उ्ते इशनान करदा हाँ।
- अकाल पुरख दे नामु विच सुरत जोड़न नाल मनुख दा मन विशाल हिरदे वाला हो जाँदा है, लोड़वंदाँ दी सहाइता करन ते सबर संतोख वाला जीवन बण जाँदा है। मनुख नूं जगत दे किसे माण जाँ आदर सतिकार दी परवाह नहीं रहि जाँदी, उस दा मन सहजि अवसथा ते अडोलता विच टिकिआ रहिंदा है।
- गुरू दी सि्खिआ लै के अकाल पुरखु दे नामु दुआरा ही पापाँ तों बचाउ हुंदा है। इह पूरी मति ते स्रेशट विचार पूरे गुरू दुआरा, पूरे गुरू दे शबद विच जुड़िआँ ही मिलदी है, कि अकाल पुरखु दा नामु ही अठाहठ तीरथाँ दा इशनान है, ते अकाल पुरखु दा नामु ही सारे पाप नास करन दे समरथ है।
- सबद गुरू ने सानूं आतमक जीवन दी सूझ दा इह निचोड़ समझा दि्ता है, कि मनुख नूं थाँ थाँ ते जा के भटकण दी कोइी लोड़ नहीं, सभ कुझ अकाल पुरखु दे नामु दुआरा प्रापत हो सकदा है।
- जिस मनुख ने व्डी किसमत नाल साध संगति प्रापत कर लइी, उस ने सभ थाँ भरपूर अकाल पुरखु दा नामु आपणे हिरदे विच वसा लिआ। फिर समझो उस ने सतिसंगत दे चरनाँ दी धूड़ विच इशनान कर के अठाहठ तीरथाँ दा इशनान कर लिआ।
- अकाल पुरखु दे नामु दी डूंघाइी बाहरले धारमिक भेखाँ जाँ पहिराविआँ नाल नहीं ल्भ सकदी, अते ना ही तीरथाँ ते इशनान कीतिआँ जाँ पुंन दान कीतिआँ ल्भ सकदी है। अकाल पुरखु दे नामु दी कदर उही मनुख करदा है, जिस नूं पूरा गुरू मिलदा है, किउंकि पूरे गुरू दुआरा ही अकाल पुरखु नाल डूंघी साँझ बणदी है।
- साध संगति विच रहि के सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिणा चाहीदा है, किउंकि इस दी बरकति नाल मन दे भरम, परिवारक मोह ते चिंता, हउमै, माइिआ दे जंजाल, आदिक, कोइी वी पोह नहीं सकदा, परंतू इह असथान गुरू पासों ल्भदा है।
- माइिआ दे मोह दी इह मैल तीरथाँ उते इशनान कर के नहीं उतर सकदी। तीरथ इशनान आदिक इह सारे मिथे होइे धारमिक कंम हउमै दा खिलारा ही है। तीरथ इशनान आदिक करमाँ राहीं आपणे धारमिक होण बारे लोकाँ दी तस्ली कराइिआँ उ्ची आतमक अवसथा प्रापत नहीं हो सकदी। अकाल पुरखु दे नामु तों स्खणे सभ जीव इथों रो रो के ही जाणगे।
- लोक कइी किसमाँ दे मिथे होइे धारमिक कंम करदे हन, इस तरहाँ सगों अ्गे नालों दूणी हउमै दी मैल आ लगदी है। पड़हे होइे लोकाँ दे मन अंदर उ्ची पदवी जाँ वि्दिआ पड़हन दा हंकार ही बणिआ रहिंदा है। आपणे मन दे पि्छे तुरन वाले बंदे राम राम आख आख के थक जाँदे हन, फिर वी हउमै दी मैल उनहाँ पासों धोती नहीं जा सकदी।
- गुरू साहिब समझादे हन कि, मैं तीरथ उ्ते जा के तद इशनान कराँ, जे इस तरहाँ करन नाल उस अकाल पुरखु नूं उ्श कर सकाँ, परंतू जेकर इस तरहाँ करन नाल अकाल पुरखु उ्श नहीं हुंदा, ताँ मैं तीरथ उ्ते इशनान करके की ख्टाँगा?
- **जेकर सतिगुरू दी इिक सि्खिआ वी सुण लइी जाइे, ताँ मनुख दी बुधी दे अंदर रतन, जवाहर ते मोती उपज पैंदे हन, भाव, मनुख दी बुधी दे अंदर अकाल पुरखु दे अनमोलक गुण पैदा हो जाँदे हन।**
- अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन तों बिना, अनेकाँ पुंन दान करन नाल जाँ अनेकाँ तीरथाँ ते इशनान करन नाल, कोइी वी जीव आपणे अंदरों विकाराँ दी मैल नहीं धो सकदा। सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दा दरबार गुरू दे शबद दुआरा ही पछाणिआ जा सकदा है। गुरू दे शबद तों बिनाँ किसे होर आसरे दी झाक नाल, उस अकाल पुरखु दे दरबार नूं ल्भिआ नहीं जा सकदा।
- जे जीव नूं गुरू मिल पइे, ताँ अकाल पुरखु दे गुणाँ दी बरकति नाल उस नूं आतमक आनंद प्रापत हो जाँदा है, ते उस दे मन विचों हंकार दूर हो जाँदा है। अकाल पुरखु दा नामु इिक पल वासते वी मनुख दे मन विच व्स जाइे ताँ उस मनुख दे सारे पाप नास हो जाँदे हन। अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित विच इशनान करन नाल, ताँ मन वी पवि्त्र ते सरीर वी पवि्त्र हो जाँदा है।

- गुरू नानक साहिब जोगी नूं समझादे हन, कि असल गिआन दी विचार इिह है, कि दुनीआ दे धंधिआँ विच रहिंदिआँ होइिआ वी मनुख नूं नींद ना आवे, भाव, उह दुनीआवी धंधिआँ विच ही ना ग्रस्त हो जाइे, पराइे घर विच आपणे मन नूं डोलण ना देवे; परंतू अकाल पुरखु दे नामु तों बिना मन टिक के नहीं रहि सकदा ते माइिआ दी त्रिशना नहीं हट सकदी।
- **अफसोस दी गल इिह है, कि अ्जकल साडे गुरुदआरिआँ विच रवाइिताँ, जोग मत जाँ होर म्ता दा परचार ताँ बहुत जिआदा हुंदा है, परंतू गुरमति दा खोज वाल गिआन बहुत घट समझाइिआ जाँदा है।**
- गुरू साहिब समझादे हन कि, मेरे वासते ताँ अकाल पुरखु दा नामु ही सभ तरहाँ दे सगन, मुहूरत, सुआद, तीरथ इिशनान, तीरथाँ ते जा के सभ कुझ दान कर देणा, वेद शासत्र दी चरचा, जोगीआँ दी सिंङी वजाणा, देवतिआँ दी पूजा, सेवा भगती, आदि है। जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दा नामु जपदे हन, उह स्चे ते सुचे आचरन वाले बण जाँदे हन।
- किसे तरहाँ दे करम काँड जाँ तीरथ इिशनान करन नाल मनुख दी काम वासना रोकी नहीं जा सकदी, मनुख दा मन डोलदा रहिंदा है, ते जीव नरक विच पिआ रहिंदा है। जेहड़े मनुख गुरू दे शबद नूं आपणे विचार मंडल विच टिका के गुरू दे द्से मारग ते चलदे हन, उुनहाँ दे मन ते सरीर विच, भाव, इिंद्रिआँ विच पवित्रता आ जाँदी है।
- किसे तरहाँ दे राग गाण नाल, नाद वजाण नाल जाँ वेद आदिक धारमिक पुसतकाँ पड़्हन नाल, समाधी लाइिआँ, गिआन दी चरचा कीतिआ जाँ जोग दा कोइी साधन कीतिआँ, नित दे सोग कीतिआँ, रूप, माल धन ते रंग तमाशिआँ विच रुझिआँ, तीरथ ते नहातिआँ जाँ नंगे घुमण नाल, दान पुंन कीतिआँ, बाहर जंगलाँ विच सुंन मुंन अवसथा विच बैठिआँ, उह अकाल पुरखु प्रसंन नहीं हुंदा है। अकाल पुरखु ताँ प्रसंन हुंदा है, जेकर सदा काइिम रहिण वाले अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़ीइे, किउुंकि जीवाँ दे चंगे मंदे होण दी परख, उुनहाँ दे मन दी भावना अनुसार ही कीती जाँदी है।
- जेकर मनुख दा मन विकाराँ दी मैल नाल भरिआ रहे ताँ उह मनुख जो कुझ वी करदा है, सभ कुझ विकार ही करदा है, सरीर नूं तीरथाँ ते जा के इिशनान कराण नाल मन पवित्र नहीं हो सकदा।
- ज़िंदगी दी रात दे दूजे पहर विच, भाव भर जवानी दे कारन जीव दी अकल इिस तरहाँ हो जाँदी है, जिवें कोइी शराब विच गुट होवे। जीव दिन रात काम वासना विच दबिआ रहिंदा है, काम विच अंनहे होइे नूं अकाल पुरखु दा नामु आपणे चि्त विच टिकाण दी सुरति नहीं हुंदी। अकाल पुरखु दे प्रेम दुआरा ही, अकाल पुरखु दी भगती दुआरा ही, इिस काम वाशना तों जीव दा बचा हो सकदा है। परंतू अकाल पुरखु दी भगती ते सिमरन वलों दुचि्तापन र्खिआँ कामादिक दी शकल विच माइिआ दा मोह जीव उुपर ज़ोर पाँदा रहिंदा है।
- जेहड़ा मनुख बरण वरगे ठंडे ठार जिगरे वाले गुरू नूं मिल के आपणे अंदरों त्रिशना दी अ्ग बुझा लैंदा है; पिंडे ते सुआह मलण दी थाँ, जेहड़ा मनुख गुरू दी द्सी होइी सेवा विच आपणी सुरति टिकाइी र्खदा है; जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दी सिफति सालाह नाल भरपूर गुरू दी पवित्र बाणी सदा आपणे हिरदे अंदर वसाइी र्खदा है, ताँ मानो कि उह असली नाद वजा लैंदा है, उुस ने असल भेख धारन कर लिआ है, ताँ फिर उह सदा अडोल आतमक अवसथा विच टिकिआ रहिंदा है।
- गुरू दे उुपदेश रूपी डूंघे गिआन विच अकाल पुरखु दी सिफति सालाह दे अनमोलक मोती ते जवाहर हन, ते जेहड़ा सि्ख गुरू दे अजेहे गिआन वाले तीरथ नूं सेंवदा है, उुस विच सरधा नाल आउुंदा है, उह गिआन दे अनमोलक खजाने खोज के ल्भ लैंदा है। गुरू तों मिलण वाला आतमक गिआन मनुख नूं पसूआँ परेताँ वाली बिरती तों देवतिआँ वाली बिरती वाला सफल मनुख बणा देंदा है।
- जिहड़े मनुख गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे नामु विच इिशनान करदे हन, उह पवित्र जीवन वाले हन, उुनहाँ ने गुरू दे शबद दुआरा आपणे मन दी विकाराँ वाली मैल दूर कर लइी है।
- मूंह नाल पाणी पीतिआँ त्रेह जरूर मिट सकदी है, परंतू पाणी नाल चुली कीतिआँ मन नहीं धुप सकदा। सुची चुली ताँ हो सकदी है, जेकर आपणे जीवन दा मंतव ते मनुखता प्रती फरज़ निभाइिआ जावे।
- जेहड़ा व्डभागी मनुख गुरू दी सरन विच आ जाँदा है, उह गुरू दे शबद विच जुड़ के सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदा रहिंदा है, उुस दे मन विच सदा काइिम रहिण वाला अकाल पुरखु सदा व्सिआ रहिंदा है, इिस वासते उुस दा हउुमै दा रोग दूर हो जाँदा है।
- गुर की सेवा ही असली तीरथ इिशनान है, भाव गुरू दे सबद दी वीचार ते गुरू दे द्से राह उुँते तुरना ही असली तीरथ इिशनान है। पाणी विच चुभी लाइिआँ जेकर मुकती मिल सकदी होवे ताँ ड्डू ताँ सदा ही नहाउुंदे रहिंदे हन। इिस लइी असली स्चा नावणु, गुर की सेवा है, जिहड़ी कि गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा ही हो सकदी है।

- जिस तरहाँ अ्ग नूं ठंडा करन लई अते बुझाण लई पाणी चाहीदा है। इिसे तरहाँ त्रिशना दी अ्ग शाँत करन लई, नामु रूपी अंम्रित दी लोड़ है। अंदरली उुँची अवसथा ताँ ही बण सकदी है, जे गुरू दे दि्से रसते उुते तुर के सदा अकाल पुरखु दा पवित्र नामु ज्पागे।
- जेकर मनुख दी बुधी पापाँ नाल मलीन हो जाइे, ताँ उुह पाप सिरफ अकाल पुरख दे नामु विच रंगिआँ ही धोते जा सकदे हन। पुंन जाँ पाप निरे कहिण वासते नहीं हन, बलकि जिहो जिहे करम कराँगे, उुहो जिहे संसकार आपणे अंदर लिख के नाल लै जावाँगे।
- गुरू नानक साहिब ने जपुजी साहिब दी पहिली पउुड़ी विच सि्ख धरम दा मुढला सिधाँत, ***'हुकमि रजाइी चलणा, नानक लिखिआ नालि'*** समझा दि्ता है। दूजी पउुड़ी विच हुकमु दी विसथार समझाँदे होइे, हुकमु सबंधी ज़िकर आइिआ है, ***'हुकमी उुतमु नीचु हुकमि लिखि दुखु सुखु पाइीअहि'***। अकाल पुरख दे नियम अजेहे हन, कि मनुख जिहो जिहे करम करदा है, उुहो जिहा फल पाँदा है। जेकर सबद गुरू दुआरा नामु दी सोझी मिल जावे ताँ, अकाल पुरख दी रज़ा विच तुर के मनुख आपणा जनम सफल कर सकदा है।
- जिस मनुख ने गुरू दे शबद नूं वीचार के, ते गुरू दी सिखिआ नूं आपणी सोच मंडल विच टिका के, आतमक जीवन दे सारे गुण ठीक ठाक बचा लइे, ताँ समझो अकाल पुरखु ने उुस दे हिरदे अंदर सारे आतमक सुख आनंद पैदा कर दि्ते हन।
- जेहड़ा मनुख तीरथाँ जा धारमक सथाना ते जा के निरा बाहरला सरीर धो लैंदा है, ते अंदरला मन विकाराँ नाल मैला ही र्खदा है, उुह वरतमान विच रहिंदिआँ होइिआ काम वाशना विच, क्रोध विच, मोह विच, फसिआ रहिंदा है, अगाँह भवि्ख विच जा के फिर उुह मानसिक ते सरीरक रोगा करके हटकोरे लै लै के रोंदा रहिंदा है।
- जेकर मनुख अकाल पुरखु दा नामु नहीं सुणदा, जेकर नामु वलों बोला रहिंदा है ताँ बाहरले धारमक करम इिउं ही हन, जिवें स्प नूं मारन दे थाँ स्प दी खुड नूं कुटी जाणा है। जेकर खुड नूं कुटदे जाइीइे ताँ इिस तरहाँ स्प नहीं मरदा, ठीक इिसे तरहाँ बाहरले करम काँड करन नाल मनुख दा मन व्स विच नहीं आउंदा।
- अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे तीरथ विच कीता होइिआ आतमक इिशनान ही अठाहठ तीरथाँ दा इिशनान है। साध संगति विच रहि के सिखी होइी जीवन जाच, उुस मनुख दे मन अंदरों सारे विकार दूर कर देंदी है ते उुस दा मनुखा जनम सफल हो जाँदा है।
- अकाल पुरखु नाल मिलाप ताँ संभव हो सकेगा, जेकर सतिगुरू अ्गे आपा वारिआ जाइे। इिस लई निरा 'गिआन' ही काणी नहीं, गिआन दे दाते सतिगुरू नाल पिआर बणाउणा वी बहुत ज़रूरी है। असली तीरथ 'सतिगुरू' है, जिस नाल पिआर करन सदका, उुह गिआन प्रापत हुंदा है, जिहड़ा मनुख नूं अकाल पुरखु नाल जोड़ देंदा है।
- जिथे वी गुरू अमरदास साहिब जाँदे सी, उुनहाँ दे नाल बहुत सारे सि्ख उुस लंमे पैंडे विच उुनहाँ नाल जाँदे सन, ते सतिगुर दी सिखिआ अनुसार अनेकाँ सि्ख गुरू अमरदास साहिब दे दि्से मारग ते च्लदे सन।
- जेकर लोक खोटे मन नाल तीरथाँ ते नहाउुण लई तुर पइे अते सरीर विच कामादिक चोर वी उुसे तरहाँ टिके रहे, ताँ अजेहे नहाउुण दी की लाभ है। गुरू साहिब समझादे हन कि, भले मनुख तीरथाँ ते नहाउुण तों बिना ही चंगे हन, ते चोर तीरथाँ ते नहा के वी चोर ही रहिंदे हन।
- जेहड़े बंदे बाहरों पवित्र दि्सण, ते मन अंदरों विकारी होण, उुनहाँ ने आपणा जीवन इिउं विअरथ गवा लिआ समझो, जिवें कोइी जुआरीआ जूइे विच धन हार के आउंदा है। जिनहाँ ने अकाल पुरखु दे स्चे नामु नूं छ्डिआ होइिआ है, ते जिहड़े विकाराँ विच फसे होइे हन, उुनहाँ ने आपणी जीवन दी खेड जूइे विच हार लई समझो।
- निरे बाहरों धारमिक दि्सदे करम करन नाल मन विच विकाराँ दी मैल उुसे तरहाँ टिकी रहिंदी है, ते मन नूं माइिआ दे मोह दा रोग चंबड़िआ रहिंदा है। फिर ज़ि्थे रोग है, उुथे आनंद किस तरहाँ हो सकदा है? इिस लई गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे स्चे नामु नूं सदा चेते करदे रहो। इिही है मन दी अरोगता दा असली वसीला, ते आतमक आनंद हासल करन वाला मारग।
- जेकर हिरदे विच कूड़ कपट दी मैल भरी होइी है, ताँ इिस तरहाँ आपणे सरीर नूं बाहरो माँजण दा कोइी णाइिदा नहीं। लोड़ है आपणे आप नूं अंदरों साफ करन दी, मन विचों विकार क्डण दी, बाहरों सुचा ते पवि्तरता र्खणा इिक धोखा है। जेकर लउुकी अठाहठ तीरथाँ उुँते वी इिशनान कर लइे, ताँ वी उुस दी अंदरली कुड़्तण दूर नहीं हुंदी।
- जिहड़े मनुख सवेरे ते शाम, भाव, दोवें वेले निरा इिशनान ही करदे हन ते आपणे आप नूं समझदे हन, कि असीं पवि्तर हो गइे हाँ, ताँ उुह इिउं हन, जिवें पाणी विच ड्डू व्स रहे हन, किउंकि ड्डू वी दिन विच कइी वारी इिशनान करदे रहिंदे है।

- असली उुॅदम उुह है, कि पंजे विकाराँ ते काबू करके अकाल पुरखु दा नामु हिरदे विच वसाईइे अते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार जीवन बतीत करीइे।
- कीते गुनाहाँ नूं 'कुरबानी' दे के धोता नहीं जा सकदा। उुह उुदा मनुख पासों सिरण दिल दी पाकीज़गी दी कुरबानी मंगदा है, जेकर मनुख दे दिल दी पवित्रता काइिम होवे ताँ आपणे कीते अमलाँ दा लेखा देणा सौखा हो जाँदा है।
- बंदगी दा वेला वी जुआनी दा ही है, जदों सरीर कंम काज कर सकदा है। जेकर जुआनी विच हुकमु ते रजा अनुसार चूलाँगे ताँ बुढेपा आपणे आप सुखाला हो जावेगा।
- तीरथाँ ते जाण नाल मनुख दा कठोर मन भिज नहीं सकदा। करम काँडाँ दे भंभल भूसिआँ विच पइे होइे मनमुख दे भरम दूर नहीं हुंदे, ते उुह इिधर उुधर भरमाँ विच भौदा रहिंदा है। भाइी गुरदास जी समझादे हन, कि पूरे गुरू तों बिनाँ मनुख दे मन अंदरों विकारा दी मैल नहीं उुतर सकदी ते उुस दा पार उुतारा नहीं हो सकदा।

कोइी विरला मनुख ही पूरे गुरू, सबद गुरू दी वीचार नाल आपणे मन अंदरों विकारा दी मैल उुतारन दी कोशिश करदा है। जिआदा तर लोक इिही समझदे हन कि कुझ रवाइिताँ पूरीआँ करन नाल जाँ करम काँड करन नाल, जाँ माइिआ भेट करन नाल अकाल पुरखु नूं खुश कीता जा सकदा है। इिह आम भुलेखा है कि असीं माइिआ, गुरू नूं भेट करदे हाँ। गुरू कोइी पैसे जाँ चीज़ नहीं मंगदा है। सि्ख पैसिआँ दी कसौटी नाल नहीं परखिआ जाँदा है। असीं ताँ आप गुरू कोलो मंगदे हाँ, फिर असीं गोलक विच पा के, गुरू नूं देण वाले किस तरहाँ हो गइे। गोलक विच ताँ असीं गुरू घर दे कारज करन लइी संसथा नूं दिंदे हाँ। फिर जिहो जिहे प्रबंधक असीं चुणाँगे उुहे जिहे कंम गुरू घराँ विच होणगे ते नतीजे वी असीं उुस अनुसार ही भुगताँगे।

विहले मंगतिआँ नूं पैसे दे के जाँ लंगर खवा के उुनहाँ दीआँ आदताँ खराब करन दा कोइी लाभ नहीं है। *"अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पड़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु इेहु होरि गलाँ सैतानु ॥१॥" (१२४५)* इिह सबद सानूं सुचेत करदा है कि दान वी अकल नाल सोच समझ के करना चाहीदा है, नहीं ताँ सैतान पैदा करन दे कसूरवार असीं खुद आप होवाँगे। इिस लइी अ्खाँ मीट के दान करन दी बजाइे, सोच समझ के माइिआ देणी चाहीदी है, जिस नाल किसे लोड़वंद दी भलाइी हो सके। किसे गरीब किरती नूं रुजगार जाँ धन दी लोड़ हो सकदी है, ते किसे अमीर नूं सबद गुरू अनुसार जीवन जाच दी लोड़ हो सकदी है। मंगते नूं पैसे दे के उुस दी आदत होर विगाड़नी नहीं चाहीदी, बलकि उुस नूं किरत करन लइी प्रेरना चाहीदा है।

परख इिह है, कि असीं आपणे आप नूं किंना कु गुरू दे हवाले कीता है। गुरू दे बचनाँ ते तुरिआँ ही सदा थिर रहिण वाला नामु रूपी अंम्रित फल पाइिआ जा सकदा है। अरदास सवै परेरना लइी करनी है, इिस लइी जेकर असीं सुधरना चाहुंदे हाँ ताँ अरदास वी आप ही करनी है, ना जो निमाणे हो के बखशिश दे पातर बण सकइीइे, नहीं ताँ हउुमै विच रहि के कुझ हासल नहीं होणा है।

सि्ख दा व्ख व्ख थावाँ ते जाण दा मंतव है, कि उुथों दी इितिहासक जाणकारी हासल करना, उुस समें दीआँ परंपरावा बारे गिआन प्रापत करना, गुरू साहिब दा उुस थाँ ते जाण दा की मंतव सी, ते किस तरहाँ गुरू साहिबाँ ने लोकाँ दा उुधार कीता। इितिहासक गुरदुआरिआँ विच चंगे प्रचारक हुंदे हन, इिस लइी गुरमति दा होर जिआदा गिआन मिल सकदा है। परंतू जेकर रवाइिता पूरीआँ करन विच ही रुझे रहे ताँ उुस दा की लाभ? हज़ूर साहिब दी यातरा लगभग ५ दिन (१२०) घंटे दी हुंदी है। जिस विच मुशकल नाल ४/५ घंटे गुरबाणी सुणन जाँ गुरमति दा गिआन हासल करन दा समाँ मिलदा है। बाकी दा समाँ सफर विच ही बीत जाँदा है। हेम कुंढ साहिब दी यातरा लगभग १० दिन (२४० घंटे) दी हुंदी है। जिस विच मुशकल नाल ४/५ घंटे गुरबाणी सुणन जाँ गुरमति दा गिआन हासल करन दा समाँ मिलदा है। बाकी दा समाँ सफर जाँ आराम करन विच ही बतीत हो जाँदा है। हज़ूर साहिब अते हेम कुंढ साहिब दे दरशन जाँ यातरा तों बाअद कोइी विरला ही इिह दसदा है, कि किनी कु होर इितिहासक जाणकारी हासल कीती है ते किनाँ कु होर गुरमति बारे गिआन हासल कीता है। प्रंतू रहिण, खाणाँ, होटल, सराँ, सौण लइी थाँवाँ म्लणा, आदि बारे सभ लोक द्सणगे। इिस दे उुलट जेकर आपणे घर दे लागे दे गुरदुआराँ सहिब विच हर रोज़ संगती रूप विच उुतनाँ समाँ ही गुरबाणी गाइिन करन, सुणन ते समझण लइी वरतिआ जावे अते गुरमति वीचार दुआरा गिआन प्रापत करन लइी समाँ बतीत कीता जावे ताँ कइी गुणाँ लाभ हो सकदा है।

गुरू गरंथ साहिब इिक उुॅचे आचरन दा सोमा है, उुॅचा आचरन ते उुॅची वीचार सिरफ सबद गुरू तों ही मिल सकदीआँ हन। इिस लइी गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ बारे वीचार करनी है ते उुनहाँ अनमोल गुणाँ नूं आपणे जीवन दा हिसा बणाणाँ है। गुरू गरंथ साहिब दी सहाइिता नाल असीं अकाल पुरख दे हुकमु नूं समझ सकदे हाँ ते उुस हुकमु अनुसार चल सकदे हाँ। जदों जीव नूं समझ आउुंदी है, कि सभ कुझ अकाल पुरखु दे हुकमु अनुसार हो रिहा

है, ते जीव आप कुझ वी नहीं कर सकदा है, ताँ फिर उस दी हउमै घटनी शुरू हो जाँदी है, जिस सदका उस दी अकाल पुरखु नाल नेड़ता वधणी शुरू हो जाँदी है। उँचा आचरन ते उँची विचार सिरफ सबद गुरू तों ही मिल सकदीआँ हन। जेहड़ा मनुख गुरू दे शबद नूं आपणे हिरदे विच वसा लैंदा है ते आतमक जीवन देण वाला नामु प्रापत कर लैंदा है, उह पराई इसत्री दा संग, पराइआ धन, लालच, हउमै, विशिआँ विकाराँ, मंदे करम, भैड़ी नीअत, पराई निंदिआ, काम क्रोध, इनहाँ सभ नूं तिआग देंदा है। हरेक करम सदा थिर रहिंण वाले अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित तों घटीआ है, अकाल पुरखु दे हुकमु ते रज़ा अनुसार कीते गइे करम सभ तरहाँ दे कीते गइे करमाँ धरमाँ नालों स्रेशट हन। अकाल पुरखु दे नामु विच ही सारीआँ धारमिक रसमाँ आ जाँदीआँ हन, अकाल पुरखु दे नामु विच ही चंगे जीवन दी जाच ते चंगा आचरन है, इस लइी गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ बारे विचार करनी चाहीदी है ते उनहाँ अनमोल गुणाँ नूं आपणे जीवन दा हिसा बणाणाँ चाहीदा है।

“वाहिगुरू जी का जलसा वाहिगुरू जी की फतिह”

Top Brief Conclusion

(डा: सरबजीत सिंघ)
आर अैच १ / इी - ८, सैकटर - ८,
वाशी, नवीं मुंबइी - ४००७०३.

(Dr. Sarbjit Singh)
RH1 / E-8, Sector-8,
Vashi, Navi Mumbai - 400703.
Email = sarbjitsingh@yahoo.com
Web = http://www.geocities.ws/sarbjitsingh
http://www.sikhmarg.com/article-dr-sarbjit.html